नं०
3
रि
गर

की आज्ञा होयतो मेरा मनोर्थ सुफल होय तब सब लोगों ने आज्ञा दी इस रीतिसे इस चौमाशे की व्यवस्था किंचित वर्णन किया परंतु सुनिये सुनिये एक बात और भी सुनिये आजतक न पाई हमने सब लोगों को नई खबर सुनाई पंच माहा वृत्तधारियों की ऐसी माहिमा पाई इसलिये हमने सर्व जैनियों को खबर पहुंचाई कि जिस वक्त ढूंढनी और ढूंढिया जी विहार करने को कहा कि आज एकम के दिन तीसरे पहर विहार करेंगे ऐसा अपने श्रावगों को सुनाया तब उनके धोरी श्रावग सेवक को बुलायकर कहा कि कुल आसवार पोरवारों में कहआवो कि आज दुपहर के बाद आरजांजी और साधूजी विहार करेंगे उनके पहुंचाने के वास्ते मरद और लुगाई सर्व आओ दया धर्म की महिमा को दिखाओ ये दया की निशानी साधुओं के विहार में बुलौवा की किस सूत्र में बखानी उत्कृष्टेपने की बात आनी अब दूसरी सुनो कि ढूंढिया मत के दो चार श्रावगों ने माहाराज साहब से कहा था कि एकम मंगसर बद को नंदराम जी आवेगा और आपसे शास्त्रा करेगा हमारे साधुवों में बड़ा भारी पंडित है इस कारण माहाराज साहब एकम को विहार न किया और पंचमी त नंदराम ढूंढिया की राह देखी उसके आने का पता न पाय तब ग्यारह बजे विहार किया और किसी को खबर न प ग्राम के दरवाजे कि तरफ जाते देख किसान लोगों ने हल मचाया सुनकर लोगों के हृदय में प्रेम हुलसाया जिसने सु वही माहाराज के दर्शन को धाया दरवाजे के बाहर पच कदम पर दर्शन पाया अंबारिया बड़के नीचे हिंदू मुसल सर्व सज्जन पुरुषों ने चरण में शीश नवाया माहाराज स का साथ छोड़ने में सबका जीव घबराया आखिर को माहा साहब ने कदम आगे को बढ़ाया इत्यादि समाचार ।

सर्व सज्जन पुरुषों को सुनाया इसमें जो कुछ शुद्ध अशुद्ध होय तो सर्व सज्जन पुरुष नाथूराम वैरागी घरबारी बडे मंदिर जीका कारवारी तिसको माफ करें इस भुमिका और ग्रंथ को पक्षपात छोड़कर बुद्धि पूर्वक विचार करो शुद्ध जिन धर्म को अंगीकार करो जिससे संसार समुद्र को तरो। अलंविस्तरेण॥

आपका कृपाभिलाषी नाथूराम वैरागी

बडा मन्दिर

जीरण—जिला नीमच ॥

॥ इश्तिहार ॥

ददतु ददतुगालिंगालिमन्तो भवन्तु अहमपि तदभावे गालिदाने समर्थः ॥

जैनी वैष्णव सर्व सज्जन पुरुषों को विदित हो कि जैन शास्त्र के अनुसार जोकि वर्त्तमान काल में अंगउपांग णादि शास्त्र हैं उनमें जिन मूर्ति का पूजन और मुखपत्ती मुख पर अष्ठ पहर बाधना साधु व श्रावक के वास्ते शास्त्र ने निकले अर्थात् सिद्ध हो जाय सूत्रों के पाठ से तब तो पूजन नहीं करने वाले तो पूजन को अंगिकार करें और मुख पर मुंहपत्ती न बांधे जो यह बात सिद्ध अर्थात् जिन प्रतिमा का पूजन न ठहरेगा और मुख बांधना अष्ट पहर ठहर जायगा तो हम मुख बांधने लगेंगे और जिन प्रतिमा का निषेध करेंगे इस शास्त्रार्थ में इस बमुजिब मध्यस्थ भी होना चाहिये दो तो पंडित जोकि व्याकरण न्याय काव्य कोष आदि के जानने वाले काषोंके बीच में जिनकी विद्वत्ता प्रसिद्ध हो और इसि बमुजिब दो संन्यासी और दो आर्य समाजी क्योंकि वे लोग वेद की रीति से मूर्त्ती को नहीं मानते हैं और दो पंडित दिगंबरी आमनाके और दो ईसाई जोकि संस्कृत के अच्छे जानने वाले हों ऐसे उपर लिखे बमुजिब मध्यस्थ कपनी विद्वत्तासे पक्षपात को छोड़कर सूत्र का अर्थ करें स्पष्ठ अर्थ को दोनो जने अंगिकार करें और जो उन लोगों का खर्चा पड़े वो हारनेवाला दे अर्थात उस की पक्ष का गृहस्थी देवे और इस कागज़ की नकल एक सरकार की नकल में दीजाय और और एक २ नकल प्रति बादियोंके पास रहै और एक नकल अपने पासमें रखा तिथि

वार मुकर्रर करके इसका नियम किया जाय जिसके बमुजिब हमारा लेख है इसके बमुजिब प्रतिपक्षी भी लिखकर हमको दे इसमें जोकोई देरी करेगा वह श्री सिंह के बाहर जिन धर्म से विमुख चौबीस भगवान का नहीं माननेवाला है जब प्रतिपक्षी इस बात को अंगिकार करेगा तब अपने हाथसे और भी लिखदेंगे ॥ इति ॥

सम्वत १९५५ कार्तिक शुक्ल २
मुकाम जीरन ज़ि॰ नीमच

द: चिदानन्दजीका
बकलम नाथूराम वैरागी
मुकाम जीरन जि॰ नीमच.

पता पुस्तकें मिलने का।

भैरूलाल खूबचन्द पोरवाल।
जीरन जिला नीमच

कापी लिखने वाले की अज्ञानता से अशुद्धियां रहगई हैं पाठक गण क्षमा करैं द्वितीया वृत्ति शुद्धता पूर्वक छापी जायगी ॥

ओं तत्सत् श्री वीतरागायनमः

* कुमतोच्छेदन भास्कर *

अर्थात्

॥ जैन लिंग निर्णय ॥

दोहा ॥

प्रथम नमू श्री वीरजन शासनपति महाराज ।
जैन लिंग निर्णय करूं भव्यजीव हितकाज ॥
बिन निर्णय जिन लिंगके किस को कहवो साधु ।
मन कल्पित करे भेष जो साधु नहीं वो बाधु ॥ २ ॥
गौतम स्वामी सुमिर कर सुधर्म स्वामी सिरनाउं ।
गुरु चरणन को नमन कर श्रुत देवी मन लाउं ॥ ३ ॥

वर्तमान काल में जो जैन धर्म की व्यवस्था होरही है उस को देख कर मेरे को खेद उत्पन्न होता है कि अत्युत्तम चिन्ता मणिरत्न के समान जिन धर्म वीतराग सर्वज्ञ देव का कहा हुवा तरण तारण भव दुःख निवारण था जिस में हुंडा सरपनी काल और पंचम आरा और दश अछेरामें असंजती की पूजा कुछ उसका सहारा दुःख गर्वित, मोह गर्वित वैराग्य वालों ने धर्म को बिगाड़ा इसलिये जैन लिंग निर्णय करना है हमारा भव्य जीव आत्मार्थ करे चाहोतो करो बुद्धि का विचारा

मनुष्य जन्म फिर मिलना है दुशवारा, सत्य बिन झूंठ से नहीं होगा निस्तारा हमतो कहते हैं मानना न मानना इख्तियार है तुम्हारा, खैर अब व्यवस्था सुनों कि इस जैन मत में दो आमना अनुमान साढे अठारह सौ वर्ष दिगम्बर और श्वेताम्बर चलरहे थे परंतु मूर्ति विषय में किसी का द्वेष न था फिर इस श्वेताम्बर आमना में गच्छादिक के अनेक भेद व झगड़े टंटे रूचे परन्तु जिन प्रतिमा से द्वेष और लिंग में भेद किसीका भी नहीं पड़ा परन्तु अनुमान पंद्रह सो इक तीस से के साल से प्रतिमा का द्वेषी लोंका लेया उत्पन्न हुआ सो उस लोंका ने भी प्रतिमा की पूजन और तीर्थ निषेध किया परंतु लिंग का भेद न किया सो इसका हाल तो हम नीचे लिखेंगे परंतु अनुमान सतरहसेके ही के साल में ढुंढक मत चला जिससे लोंके की परंपरा निषेध कर जिन प्रतिमा से विशेष द्वेष और लिंग में भेद अर्थात् जिन आगम से विरुद्ध रूप धारण करके जैनी नाम से अपने को प्रसिद्ध कर विचरने लगा जाती कुल के जैनियों को बहकाने लगा समझानहीं दया। दया का नाम ले झगड़ा मचाने लगा औरोंको करात त्याग आप रंगनादि खाने लगा ढाल चौपाई दोहा गायकर गाल बजाने लगा स्त्री बाल जीवोंको रिझाने लगा इसमें भी कुछ दिन के बाद भीकम पंथी कुछ लोगों को भ्रमाने लगा कहते हैं।

हम त्यागी परन्तु अभक्ष ❋ वस्तु खाने लगा इत्यादि अनेक व्यवस्था होने से जो इस श्वेताम्बर आमनामें ओसवाल पोरवाड वगैरः जाति धर्म से बहके फिरते हैं तिनके वास्ते जैन शास्त्रों के अनुसार साधू के जो उपगरन हैं उन्हीं को प्रथम लिखते हैं क्यों कि उन उपगरनो को जती समेगी, ढूंढिया, अर्थात् बाईस टोला, तेरह पंथी सब कोई मानते हैं और उन्ही उपगरणों के नाम से मानते हैं और रखते भी हैं परन्तु बाईस टोला और तेरह पंथी

❋ जैन शास्त्र के अनुसार अभक्ष न तु मद्य मांस

नाम तो लेते हैं और रखते नहीं हैं इसलिये जो भव्य जीव आत्मार्थी मत पक्ष को छोड कर अपनी आत्मा का कल्यान करना चाहे तो जो हम चोदह उपगनों का नाम और प्रयोजन लिखाते हैं वह जो कोई बाईस टोला तेरह पंथियों से पूछेगा और इनके पास में न देखेगा तो उस भव्य जीव को उसी वक्त इनके जाल का फंद खुल जायगा तो सत्य जैन धर्म मिल जायगा मिथ्यात तिमिर भी कट जायगा इसलिये प्रथम साधु मुनिराज के वास्ते चोदह उपगरण श्री प्रश्नव्याकर सूत्र के पांचवें संवर द्वार में कहा है सोई दिखाते हैं:—

भायण भंडोवहि ओवगरणं पडिगहो १ पायबंधणं २ पाएके सरीया ३ पायठवणंच ४ पडलाइतिन्नेवय ५ रयंताणंच ६ गोछउ ७ तिणियपछागा १० रउहरणं ११ चोलपट्टग १२ मुहणंतक १३ मादिय पायपुछणा १४ एयंपियसंजमस्स उव बूहणठायवीययव दंसमसगासिय परिरखणठयाए उवगरणं राग दोष रहियं परीहरिठवं संजएणणिच्चं पडिलेहण पफोडण पमज्जणाए अहोराउयअप्पमत्तेणहोइ संयतं निखवियठवं गिएहयठवं भायण भंडोवहि ओवगरणं.

अर्थ भावार्थ भाजन मट्टी काष्ट और फलादिक का भाः भंडो अर्थात् उपधि वस्त्रादिक ओः उपगरण अर्थात् जिससे साधु का चारित्र पले सो अब उपगरणों के नाम लिखाते हैं पडिगाहो ॥ १ ॥ कहतां पात्रा. पायबंधनं ॥ २ ॥ कहता पात्र रखने की झोली पाय केसरिया ॥ ३ ॥ कहतां पात्र की पडिलेहना अर्थात् प्रमार्जन (पुंजनी) पायठवणंच ॥ ४ ॥ कहतां पात्र के नीचे आहार करती दफे बिछावे. पडलाइतिन्नबेया ॥ ५ ॥ कहतां तीन पत कपडा के उनियालमें चौमासे में पांच प्रत पात्राकूं ढांकने के वास्ते जिससे सचित वस्तु का आहारादिक से संघट्टा न हो रयंताणंच ॥ ६ ॥ कहतां पात्रका वीटना गोछा ॥ ७ ॥ कहतां वस्त्र खंड कम्मल

बनात का ऊपर के वास्ते तिगिय पछागा ॥ ९ ॥ कहतां तीन चद्दर अर्थात् ओढ़ने की पिछोड़ी ॥ १० ॥ रउहरणं ॥ ११ ॥ कहतां रजो हरण अर्थात् काजा दूर करने के वास्ते और जीव की रक्षा करने के लिये जिसको साँकेत में ओघा कहते हैं ॥ चोलपट्टा ॥ १२ ॥ कहता वस्त्र जिसको वर्तमान काल में ढूंगा के ऊपर बांधते हैं, मुहणंतक ॥ १३ ॥ कहतां मुंहपत्ती अर्थात् प्रमाण मुजब वस्त्र बोलने के समय मुख को ढकने के वास्ते हाथ में रक्खे पादिय पाय पुछणा ॥ १४ ॥ कहतां मात्रिया अथवा पाय पूछणा यह चौदह उपगरन के नाम जुदे जुदे कहे यह ऊपर लिखित उपगरण श्री वीतराग सरवज्ञ देवने साधू के संजम पालने के वास्ते कहे और इनका प्रमाण अर्थात् कितना लंबा चोड़ा रक्खना सोतो भाष्य चूर्णि निर्जुक्ति टीका आदि में कथे हैं और प्रयोजन भी उन्ही जगह कहे हैं सो हम इस जगह नहीं लिखते क्योंकि जो मूल के मानने वाले हैं उन शख्सों को मूलही से समझाना ठीक है कारण कि जिसको जो मानता ही नहीं है उस चीज का कथन करना जैसा अंधे को आरसी का दिखाना है इसलिये अब हम जोकि ओसवाल पोरवाड़ वगैरह जाती कुल के जैनी बाजते हैं उन सर्व सज्जन पुरुषों से कहना है कि ऊपर लिखित उपगरणों को पेश्तर तलाश करे और ऊपर लिखे मुजिब उपगरण जिसके पास पावे वोही जैन का साधू और भगवत आज्ञा में है और जो ऊपर लिखित उपगरणों से विपरीत होगा वो असाधू वा भगवत आज्ञा विरोधक और मिथ्या दृष्टि है इसलिये इन बातों का निरणय करना चाहिये नाहक कदाग्रहमें न पडना चाहिये इन के जाल में फंसके आत्मा न डुबाना चाहिये गैर ॥ १ ॥ अब जो हम ऊपर लिख आये हैं कि इनकी उतपत्ती नीचे लिखेंगे सो यहां लिखते हैं कि गुजरात देशमें अेमदाबाद नगरहै वहां एक लोंका नामे लिखारि (लहिया) रहता था वो ज्ञानजी जती के उपासरे में रह कर पुस्तकें लिख कर आजिविका करता था एकदफे उसके मनमें

बेईमानी आई तब उसने एक पुस्तक के बीचमें सात ७ पृष्ठ लिखना छोड दिया जिस पुस्तक के लिखवाने वालेने पुस्तक अधूरी देखी उसने लोंका लहिया की बहुत बुरी फजीती करी उपासरे में से निकाल दिया और सर्व श्रावकों को कह दिया कि इस लोंका पाससे कोई कुछ भी पुस्तक लिखानी नहीं इस प्रमाण होने से लोंका की आजीविका बंध होगई बहुत दुःख पाया इस कारण से वो जैनमत का द्वेषी बनगया जब अहमदाबाद में लोंका का जोर चला नहीं तब वहांसे आसरे (४०) चालीस कोस दूर (लींबडी) नाम करके एक गांवहै वहां उसका (लखमसी) करके कोई परम मित्र था उसकी तरफसे कुछ आश्रय मिलजाय ऐसा विचार के लखमसी यहांके राजा का कारबारी है इसलिये वो विचारेगा तो सफल होजावेगा उसमें कोई तरह का शक नहीं । पीछे लोंका लींबडी गया वहां जाकर लखमसी से कहा कि भगवान् का मार्ग लोप होगया है लोग उलटे रस्ते चलते हैं मैंने अेमदाबादमें बहुत लोगों को सांचा उपदेश कह्या परंतु मेरा कहना न माना उल्टा मुझे वहांसे मार पीटके निकालदिया अब मैं तुम्हारी तरफसे सहारा मिलेगा तो ऐसा बिचार करके तुम्हारे पास आयाहूं इसलिये जो तुम मेरेको सहारा दोतो मैं सच्चा दया धर्म की परूपणा करूं इस माफक हलाहल बोलके विचारे मूढमति लखमसी को समझाया तब उसने उनकी बात सच्ची मानकर लोंका से कहा कि तुं खुशी से इस राजके अंदर परूपणा कर मैं तेरे खाने पीने की खबर रखूंगा इस रीतिसे सहाय मिलनेसे लोंकाने संवत् (१५०८) में जैनमार्ग की निंधा करनी शुरू की आसरे (२६) छब्बीस वर्स तक तो उसका मार्ग किसीने अंगीकार किया नहीं आखिर संवत् (१५३४) में एक अकल का अंधा महाजन उसको मिला उस भूणाने महा मिथ्यातके उदयसे उसका झूठा उपदेश मानलिया और लोंकाके कहने से गुरू बिना कपडे पहन कर मूढ अज्ञानी जीवों को जैन मार्गसे भ्रष्ट करना शुरू किया लोंकाने एकत्तीस सूत्र सच्चे माने

और व्यवहार सूत्र सच्चा मानना नहीं और जिम२जगह मूल सूत्र का पाठ जैन प्रतिमा का अधिकार था वहां मन कल्पित अर्थ जोड़ कर लोगों को समझाने लगा भुणा का शिष्य रूपजी संवत्(१५६८) में हुवा उसका शिष्य संवत् (१५७८) की महाशुद ५ के दिन जीवाजी नामे हुवा संवत् (१५८७) चैत्र बदी ४ उसका शिष्य वृद्धवरसिंह नामे हुवा संवत् (१६०६) में उसका शिष्यवरसिंहजी हुआ उसका शिष्य संवत् (१६४६) में जसवंत नामे हुवा उसके पीछे संवत् (१७०९) में बजरंगजी नामका लुंपकाचार्य हुआ श्रीसूरतका रहनेवाला वोरावीरजी की लड़की फूलांबाई का दत्तक पुत्र (लवजी) बजरंगजी के पास से दिक्षा ली दिक्षा लेने के बाद दोवर्ष के पीछे श्री दशवैकालिक सूत्र कटवा बांच्या बांचके गुरू से कहने लगा कि तुमतो साधू के आचार से भ्रष्टहो ऐसे कहने से उसी वक्त गुरू के साथ लडाई कर के उसी वक्त लवजीने लुंपकमत और गुरू छोड़ के थोभण रिष वगेरह को साथ लेकर स्वमेव दिक्षा ली और मुख ऊपर पाटा बांधा उस लवजी का शिष्य सोमजी तथा कानजी हुवा उसके पास गुजरात का छींपा धरमदास दिक्षा लेने को आया वो कानजी का आचार भ्रष्ट जान कर स्वमेव साधू बनगया और मुंहपत्ती मूंढे बांधी धरमदास को रहने का मकान ढूंढा अर्थात् फूटा हुवा (उजाड़) होने से लोगों ने उसका ढूंढक ऐसा नाम दिया लुंपकमती कुंवरजी का चेला धरमसी, श्रीपाल, और अमीपाल, ये तीन हुये उन्होंने भी गुरू को छोड कर खुद दिक्षा ली उस वक्त धरमसीने आठ कोटी पचखाण का पंथ चलाया वो गुजरात देश प्रसिद्ध है धर्मदास छींपा का चेला धन्नाजी हुवा उसका चेला भदरजी के चेले रघुनाथा, जेमल, और गुमानजी ये तीन हुवे उसका परिवार मारवाड़ तथा मालवा तथा गुजरात में विचरता है रघुनाथ का चेला भीकम तेरापंथी मुःख बंधा का पंथ चलाया है इसरीति से इनकी कुल उत्पत्ती श्री आत्मारामजी का बनाया हुवा समगतसल्या उद्धार ग्रंथ में विशेष लिखी हुई है वांही

से देखो हमको तो इतनाही प्रयोजन था सो सज्जन पुरुषों को लिख दिखाया इसलिये सज्जन पुरुष आत्मार्थी निर्णय करके धर्म को अंगीकार करे किसीके मत जाल में न पड़े शुद्ध जिन धर्म को अंगीकार करे जिससे आपसमें न लडे मुंहपत्ती बांधने की इच्छा भी न करे क्यों कि लोक विरुद्ध बात को हृदयसे परहरे इसलिये हमारा कहना है कि लोंकाने तो मंदरकी पूजा आदिक निषेध का मार्ग चला परंतु मुंहपत्ती मुख पर अष्टपहर बांधने का मार्ग उसने भी न चलाया अष्टपहर मुहपत्ती बांधने का मार्ग (१७०९) के साल लवजी और धर्मदास छीपाने चलाया है और गुरूके बिना चारित्र भी इनहीं ने लिया है आगम के देखने से जिन आज्ञा विरुद्धभी इन्होंनेही कीया है इसलिये आत्मार्थी इन पुरुषों का संग न करे गा तो ठीक होगा ॥ अब इस जगह प्रश्न उत्तर उठाते हैं ॥ मुंपत्ती बांधने वाले का भर्म खुलासा दीखता है कि यह ढुंढक लोक भोले जीवों को बहकाते हैं जैन धर्म का उड्डाह कराते हैं अन्य मती लोगोंको हंसाते हैं आप डूबे और भोले जीवोंको डुबातेहैं (प्रश्न) अजी मुहपत्ती तो गौतम स्वामी आदि गणधरोंने बांधी है फिर तुम्हारा निषेध करना क्यों कर बनेगा (उत्तर) भोदेवानु प्रिय गणधरादिक को मुहपत्ती बांधना कहतेहो इसलिये तुम्हारे को मृषा वाद आताहै क्योंकि देखो श्री बिपाक सूत्र अध्येन १ में ऐसा लिखाहै सो पाठ दिखाते हैं ॥

तत्तेणंसे भगवं गोयमे मीयंदेवीय पीठ उसगु गच्छति तत्तेणं सामीया देवीतंकठ सगडीयं अणुंकठमाणी २ जेणे व भूमी घरेतेणेव ओवा गच्छइ २ त्ता ॥ चउप्पडेणं वथ्थेणं मुंहबंध माणी भगवं गोयमे ऐवं वयासी तुभ्भे विणं भंते मुहपोत्तीयाय मूह बंधह तत्तेणं सेभगवं गोयमे मीयादेवीय एवं वूत्ते समाणे मोहपोत्तीयाए मुह बंधई २ त्ता

अर्थ तिसपीछे भगवंत श्री गोतम स्वामी मृगादेवी राणीके

पीछे २ चले तब मृगादेवी राणी जहां । भूमि घरथा वहां आती हुई और चउपडेण कहतां चारपूर्त करके (चारतह) मुःख को बंध मानी कहता बांधती हुई और भगवंत श्री गौतम स्वामी से कहती हुई कि हे भदंत अर्थात् हे पूज्य तुमे बिणकहतां आपभी मोहपत्ती याऐ कहतां मुंहपत्ती से मुंह बंधेक आप मुख को बांधो तत्तेणंक० तिसपीछे ते भगवंत गोतम स्वामी प्राया देविक० मृगादेवी के कहने से मोहपत्तीयाऐ कहता मुःख वस्त्र कासे मुंहबंधई २ त्ताःक० मुख को बांधते हुवे ॥ इस बिपाक सूत्र के पाठ सेतो श्रीगौतम स्वामी के मुखमे मुखपत्ती बंधीहुई नहींथी किन्तु हाथमें थी क्यों कि जो मुःखसे बांधी हुई होती तो मृगादेवी रानी का कहना ऐसा कदापि न बनता कि हे भगवंत आप मुंपत्ती से मुःखको बांधो क्यों कि चोदह उपगरणों में तो मुःख पत्ती एकही गिनाई है तो फिर दूसरी मुंहपत्ती कहांसे आई जिसके वास्ते मृगा देवीने कहा दूसरा और भी सुनो कि मृगादेवी के कहने बाद जो गोतम स्वामी के मुंहपत्ती बंधी हुईथी तो गोतम स्वामी ने दूसरी कौनसी मुंहपत्ती से मुःख बांधा क्योंके ऐसा पाठहै कि मृगादेवी के कहने के बाद मुंहपत्ती यों मोहबंधई २ त्ता कहनेसे पीछे मुंहपत्ती से मुःख बांधा इस रीतिसे तो श्रीगोतम स्वामी के हाथमें मुःखपत्तीथी न तू मुःखके ऊपर बंधी हुईथी अब इस जगह मुंहपत्ती बंधने वाले एसा कहतेहै कि श्री गोतमस्वामीके मुंहपत्ती तोमुःखसे बांधी हुईथी परन्तु मृगादेवीने नाक को बांधना कहा था क्योंकि दुर्गंधनासिका को आती है मुःख को नहीं इस हेतुसे मृगा देवी का कहना और गोतम स्वामी का बांधना हुवा इसलिये मुखपत्ती मुंह पर बांधनाही ठीक है जो ऐसा कहने वाले हैं उनको उत्तर देना चाहिये कि भोदेवानु प्रिय इस तुम्हारे कहने से तो श्री गोतम स्वामी गणधर सूत्र बनाने में भूल गये क्योंकि मृगादेवीने नासिका बांधने को कहा और उन्हों ने मुंहपत्ती से मुःख बांधना लिख दिया तो सूत्र गलत ठहरे तो गण- धर आदिक के वाक्य को छोड़ कर तुम्हारे मनो कल्पित अर्थको

कौन बुद्धिमान अंगीकार करेगा सोतो नहीं किन्तु तुम सरीका होगा सोई मानेगा अपनी पक्षपात को तानेगा सच्च झूठ को न छानेगा इसलिये जो तुमको आत्मा का अर्थ करना है तो गणधरों के वाक्य को मानो मत पक्षकोमत तानो गुरूके ज्ञान को पहिचानो छोडो मत पक्ष जिससे होय तुम्हारो कल्यानो खैर अब देखो सूत्र आचारंग श्रुतस्कंद १ अध्येन ८ उद्देशा ७ सोपाठ दिखाते हैं:—

जेभीखू अचेले परिवुसीए तस्सणं भिखुस्स एयंभवाति चाएमिअहंतणफासं अहियासित्तए सीयंफासं अहियासीत्तए तेउफासं अहियासीत्तएएवंदंसमग्गफासं अहियासीत्तए एगंतरे अनेरे विरुवरुवेफासेअहियासीत्तए हिरी पडीछादणंच अहंणो संचाएमि अहियासीत्तए एवंसेकप्पइ कडिबंधणं धारित्तए ॥

अर्थ—जो कोई साधू प्रातिमा प्रतपन्न अवग्रह विशेष अचेल कहता वस्त्र रहित तिस साधू के ऐसा अभिप्राय होय सो कहते हैं कि त्रणसुपर्स से जो उपजे दुःख तिसके सहने को समर्थ क्योंकि जो मोटे कार्य करने के ताँई सावधान हुएहैं उन पुरुषों को तरण सुपर्स का परीसा किंचित्तमात्र भी ना प्रातिभासे तथा नाम तैसेही सीत अर्थात् सियाले का परीसा तथा नाम तैसेही ग्रीष्म काल का परीसा तथा नाम तैसेही चौमासे में दन्स मन्स आदिक का परीसा सहने में और भी अनुकूल प्रातिकूल उपसर्ग आदि नाना प्रकार के सहने को मैं समर्थ हूं परंतु लज्जा करके जो गुह्यप्रदेश है उसके दिखाने को नहीं समर्थ अर्थात् गुह्यप्रदेश उघाडा रखने में मेरेको लज्जा होती है इस रीतिका अद्धवसाय जिस साधू के होय उस साधू के वास्ते काटि बंधन अर्थात् चोल पट्टा एक हाथ चार अंगुल प्रमाण चोड़ा और काटि प्रमाण लंबा एक कल्पे अर्थात् धारण करे दूसरा नहीं रक्खे इस रीतिसे इस पाठ में चोल पट्टा अर्थात् काटि बंधन कहा परन्तु मुख वस्त्र कासे मुख बांधना तो कहा नहीं क्यो कि बांधने की चीज बांधने

को कहाहै और नहीं बांधने की को नहीं बांधना कहा क्यों कि देखो कटि पर बांधनेका था तो बांधना कहा जो मुःखपत्तीका बांध ना होतातो मुंहपत्ती को ही बांधना कहते इसलिये मुंहपत्ती को बांधना नहीं चाहिये गुरू ज्ञानको समझना चाहिये अज्ञान को छोड़ना चाहिये कहीं मुख बांधने का पाठ हमको भी बताना चाहिये केवल मन कल्पित गाल न बजाना चाहिये जैन का नाम ले जैन मतको न लजाना चाहिये अन्य मातिके लिंगको मिटाना चाहिये सत्य जिन आज्ञा को उठाना चाहिये नाहक मिथ्यात् को न बढाना चाहिये सद्गुरूका उपदेश हृदय में धरना चाहिये खैर अब मुख बांधने वाले कहते हैं कि इसको मोहपत्ती क्यों कहा इसलिये मालूम होताहै कि मुंहपत्ती बांधनी ठीकहै (उत्तर) भोदेवान् प्रिय! हठको छोड कर कुछ बुद्धि का विचार करो कि मुंहपत्ती कहनेसे मुखका बांधना सिद्ध नहिं होसक्ता क्यों कि जो बांधना होता तो प्रथम अंग श्री आचारंग सूत्रके श्रुत स्कंध २ दूसरा अध्येन२ उद्देशा ३ तीसरेमें एसा पाठ कदापि न होता सो पाठ दिखाते हैं:-

सेभिखूवाभीखूणीवा उसासमाणेवा निसासमाणेवा कासमाणेवा छियमाणेवा जंभाय माणेवा उडुवाएवा वाय णि सग्गेवा करे माणेवा पुव्वामेव आसयंवा पोसयंवा पाणिणा परि पेहित्ता ततोसंजयामेव ओसासेज्जा जाव वायाणि सग्गेवा करेज्जा ॥

अर्थ-सेकहता सेभिखू अर्थात् साधु अथवा साधवी उसा समाणेवा कहता ऊपरको उसास लेवे अथवा नीचको उसास लेवे अथवा खासतो वा छींकेतो अथवा जंभाई लेवतो डकार लेवेतो अथवा वाय कहता जो अधोद्वारमें से हवाका निकलना अर्थात् जिसको (पाद) बोलतेहैं इतनी चीजोंके करनेके वक्त (पाणिणा परिपेहिता) कहता हाथसे ढके तिसके बाद ऊपर लिखे कामों

को करे अब देखो इस पाठमें खासना वा छीकना वा जंभाइका लेना अथवा डकारका लेना ये सब चीज मुख से होतीहै तो जब मुख बांधा हुवाथा तो फिर ढकना क्यों कहा इसलिये हे भोले भाईयो इस मनकल्पित जालको छोडो क्यों अर्थको मरोडो जिन आज्ञाको क्यों तोडो हम तो तुम्हारी करुणा कर के तुम्हारे को समझाते हैं जो तुम को अपना कल्यान करना होयतो अंगीकार करो परभव से डरो क्यों नाहक झगड़ा करो राग द्वेषको परिहरो वीतरागके धर्मको अंगीकार करो जिनराजके शुद्धलिंग को अंगीकार करो मुंहसे मुखपत्ती को परिहरो जिससे संसारमें जन्म मरण न करो क्योंकि बिना लिंग निर्णयके जो जातिकुलके जैनी हैं वे लोग अथवा अन्यमतके लोग हाथमें मुखपत्ती रखने वाले को जैनका साधू माने अथवा मुंह बांधने वालेको जैनका साधू माने क्योंकि दोनोंका भेष जुदा२ मालुम होताहै इसलिये प्रथम जो चिन्ह साधूका है उसका निर्णय अवश्य होना चाहिये क्योंकि देखो श्री महावीर स्वामीके वक्तमें श्रीपार्श्वनाथ स्वामीके साधू विचरते थे सो उन श्री पार्श्वनाथ के साधुओंका भेष श्रीमहावीरस्वामी के साधुओंसे भिन्न चिन्हथा और मोक्ष मार्ग साधने में दोनों की प्रवृतीथी सो उन दोनोंका जुदा२ भेष देखनेसे लोगोंकु शंका होतीथी कि इन दोनोंमें जैनी कौनहै इस विपरीत लिंग होनेसे जैनी और वैष्णव मत वाले दोनोंका भर्म मिटानेके वास्ते श्रीगोतमस्वामी और श्रीकेशीकुमार दोनोंजने मिलकर भिन्न लिंगको दूरकर एक लिंग रक्खा सो श्री उत्तराध्येनजी के २३ वें अध्येनमें जो पाठहै उसको लिखकर दिखाते हैं:—

अचेलगोयजो धम्मो जोइमो सतरुत्तरो देसीउवद्ध माणेणं पासेणयमाहामुणी २९ एगकज्जपवणाणं विसेसाकिन्तु कारणं लिंगे दुविहेमेहावी कहंविप्पचउनते ३० केसीएवंबुवाणंतु गोयमोइणामब्ववी विन्नांणेण समागम्म धम्मसाह

णा भिछयंर३पच्चयथ्थचलोयस्सनाणविहाविगप्पणांजतथ्थगहण थ्थंच लोगेलिंगप ओपणं ३२ अहभवेपइन्नाउ मोक्षसभूय- साहणेनाणंच दंसणंचेव चरित्त चेवनिथ्थए ३३ साहुगोयम पन्नाते ॥ ३४ ॥

अर्थ--अचेल कहतां मानोपेत सफेद वस्त्र जीर्ण अभिप्राय ऐसा श्री वर्द्धमान स्वामीने कहा अर्थात् उपदेश दिया और इस अचेल धर्म को श्री पार्श्वनाथ स्वामीने पांच वरन के मानोपेत रहित अर्थात् प्रमाणनहीं ऐसा उपदेश दिया और मोच पहुंचाना अथवा उपार्जन करना ये एक सरीखा कार्य पडिवज्जा अर्थात् उपदेश दिया तो फिर आचारमें फरक क्यों पडा इसका कारण क्या हुवा इस रीतिका बिचार उत्पन्न हुवा क्योंकि यती अर्थात् साधुका लिंग दो प्रकार का होनेसे मे०क०हे बुद्धिवंत किसवास्ते अविश्वास तुम्हारेको उत्पन्न न हुवा ऐसा श्रीकेशीकुमार बोले तिस पीछे श्रीगोतमस्वामी आगे दिखाते हैं सो कहते हुवे कि विशेष ज्ञान जोके बल ज्ञान तिस ज्ञान करके सम्यक प्रकारे सच्च प्रकारसे जान करके तिर्थंकरदेव धर्म साधन के वास्ते उपगरण वस्त्र आदिक रखने की आज्ञा दीनी है क्योंकि यती का भेष तिससे मालूम पडे कि यह जती है इस प्रतीति के अर्थ लोगों के विषय संजम मात्र के निवने के अर्थ वस्त्र आदिक उपगरण रखने की आज्ञा तिर्थं- करदेव साधू को दीनी है ज्ञान के अर्थ वस्त्रादिक उपगरण रखना जिससे यती का भेष होय तो ऐसा ज्ञान आवे और यती का भेष मुजिब भेष होयतो लोग प्रतीति करे नहींतो लोगों को अनाचरण मालुम पडे इसलिये यथावत लिंग धारन करना चाहिये जिससे लोग साधु और पूज्य जाने क्योंकि प्रतीत होय वोही यती का भेष होय तब लिंग ऐसा जाने कि जैसा तिर्थंकरों ने यती का आचार कहा है उसी मुजिब में रक्खूं तो खरा और मोच का सद्भुत अर्थात् सच्चा साधन तो ज्ञान, दर्शन, और चारित्र निश्चय नय

भेष कहा है क्योंकि जैसे भरतादिक ने जतीके भेष बिना गृहस्थ पने में ज्ञान दर्शन, चारित्र करके मोक्ष का साधन किया है गोतम प्रतिज्ञा से तुम्हारी यहां इस रीति से केशी और गोतमस्वामी के शिष्यों को दो प्रकार का भेष देख एक संशय उत्पन्न हुवा सो किसवास्ते संशय उत्पन्न हुवा कि वे लोग आत्मार्थी थे उनका संदेह मिटाने के वास्ते श्रीकेशीकुमार और श्रीगोतमस्वामी यह दोनों आचार्य्य महाराज आत्माअर्थी और दूसरे के उपकार करने में था चित्त जिनका ऐसे सत्पुरुष दोनों जने मिलकर संशय के दूर करने के वास्ते जिन धर्म की एक्यता करी और पहिली आचरणा को छोड़ श्री माहावीर स्वामी की आचरणा को अंगीकार किया और अपने दोनोंतरफ के शिष्यों का सन्देह दूर करके जिनधर्म में एक भेष अर्थात् एक लिंगही रहेगा लोगों का संशय दूर हुआ इसी कारणसे इस अध्येन में यही कथन लिक्खा है इसलिये इस पञ्चमें कालमें भी जो आत्मार्थी है उन पुरुषों को तो मुख बांधने वाले को देख कर और हाथमें रखने वाले को देख कर अवश्यमेव संशय उत्पन्न होगा कि इन दोनों में जैन का साधु कौन है जब ऐसा संदेह जिन पुरुषों को होगा वे पुरुष तो अवश्यमेव निर्णय करने की इच्छा करेंगे कि जैन के साधु मुख बांधने वाले हैं कि हाथमें मुहपत्ती रखने वाले हैं उन्हीं आत्माअर्थी सत्पुरुषों के वास्ते हमने इस लिंग निर्णय करने के वास्तेही उद्यम किया है न तु जातिकुल के ओसवाल पोरवाड़ वगेर:जोकि अपने में ऐसा अभिमानसे समझते हैं कि जैनधर्म हमारेही लारे चलता है और हमारे सिवाय दूसरा इस जैनधर्म को कोई नहीं मानता सो हमारी खुशी आवे जिसको साधु माने और उससे बिपरीत को असाधु माने और जिसको हमने पकड़लिया उसको कौन छुड़ाने वाला है क्योंकि जैन धर्म में तो हम लोगों की मुख्यता है इसलिये हमारी खुशी होवे जैसा धर्म चलावें ऐसा जिन पुरुषों को अपनी जातिकुल और धन खर्चने का अभिमान है और आत्माअर्थ धर्म करना परभव को सुधारना असत्य को

छोड़ना सत्य को ग्रहण करना और सूत्र किसकी जबान से सुनना और किससे न सुनना कौन सच्चा अर्थ कहता है कौन झूठा अर्थ कहता है इत्यादि बातों का तो कुछ ख्याल है नहीं केवल अपनी पकडी हुई पुंछड़ी में लिपटकर विवाद करते हैं उन पुरुषों को कदापि संशय न उत्पन्न होगा इसलिये उनके वास्ते यह ग्रंथ भी उपकारी न होगा इसलिये अब जो कोई भव्यजीव आत्मार्थी दृष्टि राग मिमत मत पक्षको छोड़कर शास्त्रानुसार निश्चय करके श्रीवीतराग सर्वज्ञ देव के धर्म को अंगीकार करे जिससे संसार समुद्र से तरैं फिर जन्म मरण भी न करै सत्य उपदेश को हृदय में धरे जालियों की जालमें न पड़े इस वास्ते हमारा कहना है कि जैसा इस उत्तराध्येनजी के तेईसवें अध्येन में जो जिन धर्म की एकता और एक लिंग अर्थात् भेष निश्चय हुआ वैसाही इस जगह आत्माअर्थी निश्चय करके अंगीकार करे अब इस जगह मुंहपत्ती बांधने वाले कहते हैं कि मुंहपत्ती तो हमेशा से बांधते हैं तो यह बात कोई नवीन थोड़ी है ॥ उत्तर ॥ भोदेवानु प्रिय जो तुम कहते हो कि हमेशा से बांधते हैं यह तुम्हारा कहना अनसमझ और कदाग्रह रूप मृषावादहै क्योंकि देखो जो साधुओं का हमेशा से मुख बंधा होता तो दांत होट आदि किसीको देखने में नहीं आते जब दांत आदि देखने में न आवेगा तो फिर उन दांत आदिक को बुरा भला कौन कह सक्ता है इसलिये देखो हम तुमको दिखाते हैं कि अगाडी के साधुओं का मुंह खुला हुवा था उत्तराध्येनजी के १२ में अध्येन में ६ ठी गाथा देखो ॥

कयरेआगछईदित्तरुवे कालेविगरालेफोक्कनासे उमचेल एपंसुपिसायभूए संकर दूसंपरीहरीयकंटे ॥

अर्थ-हरि केशीमुनि जज्ञ करने वाले ब्राह्मणोंके पासमें गया उस वक्तमें जो ब्राह्मणों ने निंदाकारी बचन बोला सोही दिखाते हैं कि अरे यह कौन आता है अत्यन्त कुरूप अर्थात् भूंडा है रूप जिसका

काला वर्ण मोटे दांत बिकाल रूप बांकी नासिका असार वस्त्रधारी पिशाच रूप उकरड़ी अर्थात् गलियों के पड़ेहुए वस्त्र पहरे हुवे दलिद्री सरीखा इत्यादि अनेक वाक्य निंदारूप हरि केशीमुनि को ब्राह्मणोंने कहे और मुख बांधने की निन्दा तो न करी इस से प्रत्यक्ष मालूम होता है कि साधू का मुख बंधा हुआ नहीं जो हरिकेशी मुनिका मुख बंधा हुवा होता तो ब्राह्मण प्रथम यही कहते कि यह मुख बंधा कालावरण पिशाचरूप कौन आया है सोतो न कहा क्योंकि देखो वर्तमान कालमें जो मुख बांधते हैं उनको लोग यही कहते हैं कि यह मुख बंधा है ऐसी लौकिक में प्रत्यक्ष बात चलती है इसलिये साधूको मुख बांधना ठीक नहीं दूसरा और भी सुनो कि नसीथ सूत्र उद्देशा ६ में ऐसा लिखा हुवा है कि दांत की बत्तीसी को दांतन आदिक से मले तो प्राश्चित आदिक आवे सोही सूत्र दिखाते हैं:—

जेभिखूमाउग्गासम्ममेहुणवडीयाए अप्पणोदन्तेआघसेज्जवाअघसेतंवा साइज्जइ ६७ जेभिखुमाउग्गामस्स मेहुण वडीयाए अप्पणोदन्तेसीओदगवीयडेणवा उछोलेज्जवा पधोलेज्जवा उछोलतंवा पधोलंतंवा साइज्जइ ॥ ६८ ॥

अर्थ—जो कोई साधू साधवी जिस स्त्री की जैसे माता जैसी इन्द्री है उस स्त्रीसे मैथुन के निमित्त अपने अचित दांत करके एक दिन घिसे हररोज घिसे उसको अनुमोदे अर्थात् अच्छा जाने जो कोई साधू साधवी माता जैसी इन्द्री है उससे मैथुन अर्थ अपने दांतको शीतल पाणी (जल) अर्थात् अचित से लेकर एक वार धोवे बारंवार धोवे अथवा एकदफे धोते को बहुदफे धोतेको अनुमोदे अर्थात् अच्छा जाने अब विचारना चाहिये कि जब मुख बांधा हुवा होता तो दांत घिसना अर्थात् धोना ये शृंगार देखकर स्त्री आदिक क्यों खुशी होती इसलिये मुंह बांधना हमेशा से नहीं चला जो मुंह बांधना हमेशा से चला होता तो ऐसा पाठ कदापि न लिखते

इसलिये तुम्हारी शंका का करना अनसमझ कदाग्रह रूप मृषा-वाद है खैर अब सत्य असत्य को बिचारो असत्यको छोड सत्य को धारो कदाग्रह रूप मृषावाद को छोड़ो सर्वज्ञ वचनको जोड़ो कुलिंगका उतारो शुद्ध लिंग को धारो जरा आंख मीचकर बिचारो और आतम गुण प्रगट करो अब फिरभी इसी नसीथ सूत्र के १५वें उद्देशेमें इसी मूजब पाठ दांतके रंगनेके ऊपर कहाहै सोभी दिखातेहैः-

जेभीखू माउग्गामस्स मेहुणवडीयाउ अप्पणो दंते फूमे ज्जवारयज्जवा फूमंतंवारयंतंवा साइज्जइ ६२, नी० उ० ६ जे भिखुविभूसावडियाए अप्पणोदन्ते आघसेज्जवा पघसे ज्जवा अघसंतंवा पघसंतंवा साइज्जइ १३६ जेभिखु विभू सावडियाए अप्पणोदंते सीउदगवीयडेणवा असीणोगद वीयडेणवा उछोलेज्जवा पधोयज्जवा उछोलंतंवा पधो लंतंवा साइज्जइ ४० जेभिखुविभूसावडियाए अप्पणो दंते फूमेज्जवारएज्जवा मखेज्जवा फूमंतंवा रयंतंवा मखंतंवा साइज्जइ ॥ ४१ ॥

अर्थ—जो कोइ साधु साध्वी माता जैसी इन्द्री है उस स्त्रीसे मैथुनके अर्थ अपने दांतोंको खटाईका रस लगाकर सुंदर करे अथवा अलतादिकका रंगकरके खटाईका रस लगाकर सुंदरकरने वाले को अथवा रंगने वालेको अनुमोदे अर्थात् सुंदर न करे जो अगर मुखबंधा हुआ होतातो दांत रंगना ऐसा क्योंकर दांत दीखते तथा होठों बाबत सूत्र ३०।३१।३२।३३।३४में खूब अधिकार लिखाहै इसलिये इस प्रमाण से मुनिको मुख बंधा हुआ नहींथा जोकोई साधू साध्वी शोभाके कारन अपने दांतोंको शीतल (ठंडा)पानी (जल) से अचित करके उष्णजल अचित करके एकवार धोवे वारंवार धोवे एकवार धोतेको वारंवार धोतोंको अनुमोदे जो कोई साधू साध्वी शोभाके अर्थ अपने दांतोंको खटाई का रस लगाकर सुंदरकरे अलतादिक रंग करके रंगे अथवा मसले खटाई का रस

लगाते को रंगते को मसलते को अनुमोदे अर्थात् अच्छा जाने जो अगर मुख बांध्या हुआ होता तो दांत घिसे तथा धोवे तथा रंगे वो कैसे दीखता तथा स्त्री आदिक देखके कैसे राजी होती है इस प्रमाण से यह निश्चय हुया कि मुनी के मुखको मोहपत्ती बंधी हुई न थी यह स्पष्ट मालुम पडता है बुद्धिवंत होगा सो बिचार करेगा मतपक्षी तो मतपक्ष में खुशी हैं उसको जोग्य अजोग्य बस्तु नहीं दीखती है उसका कुछ दोष नहीं उसको मतपक्ष रूपी भंग चढी हुई है बिचार क्या करें परवश हो रहा है मिथ्यात रूपी नशे में सोरहा है कुगुरुओं के बहकाने से मगन हो रहा है चिंतामणि रत्नको हाथ से खो रहा है इस बात को सुनकर मुंह बांधने वाले कहते हैं कि आपने सूत्रोंकी साक्षी दी सो तो ठीक है परंतु कुच्छ बुद्धि का बिचार करो कि श्री वीतराग सर्वज्ञ देव ने इसका नाम मुखपत्ती कहा तो बांधना अवश्यही सिद्ध हो गया क्यों कि मुखपत्ती तो फिर खुला मुख क्यों कर रहेगा इसलिये मुख पर मुंहपत्ती बांधनाही चाहिये (उत्तर) भो देवानु प्रिय! इस तेरे प्रश्न से हमको मालुम हुआ कि तेरेको न्याय व्याकरण की धातु प्रत्यय अव्यय लिंग बचन आदिका किंचित भी बोध नहीं क्यों कि तेरे कहनेसेही स्पष्ट मालुम होता है क्यों कि जो तेरे को शब्द का बोध यथावत होता तो सूत्र का भी अर्थ यथावत मालुम हो जाता तो फिर इस बिपरीत लिंग कुं क्यों धारण करता खैर अब तेरेको जो तेरा मन कल्पित मुखपत्ती से मुंह बांधना सिद्ध करता है तो हम तेरेको तेरी बुद्धि कल्पित अर्थ को पूछते हैं सो तेरे मनोकल्पित माफक उस अर्थ को भी अंगीकार कर सो हमारा पूछना ऐसा है कि जैसे तू मुखपत्ती कहने से मुख बांधना सिद्ध करता है तैसेही चोलपट्टा इसकाभी अर्थ चूले पे रखना अथवा चोली से बांधना ऐसा अर्थ होगा ढूंगा के ऊपर लुगाई की तरह घाघरा सरीखा पटली मार कर पहरना न बनेगा क्यों कि ढूंगा पट्टा कहते जबतो तुम्हारा घाघरा के बतौर पटली मार

कर बांधना ठीक होतो दूसरा और भी सुनो कि चद्दर इस शब्द के कहने से चांद पर (सिर) पै रखना चाहिये भीलों की तरह गाती न मारना चाहिये क्यों कि चद्दर ऐसा शब्द कहा गाती मारनी नहीं कहा तीसरा और भी सुनो कि पात्रा इस शब्द के कहने से पांव (पग) में रखना चाहिये आहार क्यों लाते हो क्यों कि आहार आत्रा तो कहा नहीं इत्यादि तुम्हारे शब्दार्थ के मूजब तो कुल शब्दार्थ बिपरीत हो जायगा इसलिये यथार्थ शब्दार्थ मानो मूर्खता की बातको मत तानो छोडदो अभिमानो जिन आगम के रहस्य को पहिचानो यह उपदेश हमारा मानो जिससे होय तुम्हारो कल्यानो जिससे मिले तुमको उत्तम ठिकानो इस जगह फिर मुख बांधने वाले सूत्र के प्रमाण बिदून मनोकाल्पित प्रश्न करते हैं सो यह प्रश्न है कि नागसरि ब्राह्मणी के यहां कोई साधुजी गोचरी लेनेकुं गये उस वक्त इस ब्राह्मणी ने कडुवे तूंबे का आहार बहराय दिया उस कारणसे अनंत भव भुगतके एक साहुकारके यहां जन्म लिया कुछ बरससे उसका बिवाह हुआ तो उस के अगले जन्म का बैर होनेसे अनबनत रहतीथी सो कुछ दिन से कोई साधू मुनिराज गोचरी लेने आए उस वक्त में उसने अर्ज की कि महाराज साहिब मेरे पति के और मेरेमें अनबनत रहती है सो आप मुझे कोई इलाज याने जंत्र मंत्र तंत्र बताओ उस वक्त में मुनिराज ने दोनों कानों में उंगली लगाकर कहने लगे कि हमतो इस बातको कानसे भी नहीं सुनते इस अनुमान से सिद्ध हुआ कि मुंहपत्ती मुहपै बंधी हुई थी (उत्तर) भोदेवानु प्रिय! यह तुम्हारा प्रश्न विवेक शून्य बुद्धि विचक्षणता मतपक्ष हटग्राहीपने का है क्योंकि जिन शास्त्रों को तुम मानते हो उस में तो यह जिकरही नहीं और जो जिकर होता तो तुमको पाठ बोलना था खैर अब हम तुमको समझाते हैं कि जो साधु उसके मकान में गयाथा उसको जातेही पूछा था अथवा आहारादि बहरायकर पूछाथा जो तुम कहो कि जातेही पूछाथा तो साधु

कान में उंगली देकर इस बातको क्यों सुनता रहा क्योंकि जहां स्वार्थ अर्थात् संसारी बात कोई कहे तो साधु खडा न रहे इसलिये कान में उंगली देना नहीं बनता क्योंकि साधुके जातेही गृहस्थी अपने मतलब की बात करे तो साधु न ठहरे इसलिये यह तुम्हारा कहना असंभव है जो तुम कहो कि आहार बहराने के बार कहाथा तो यह भी बात संभव नहीं होती है क्योंकि आहार लेने के बाद साधु गृहस्थी के घरमें ठेरेही नहीं कदाचित तीसरे तुम ऐसा कहो कि वह आहार बहराती जातीथी और कहती जातीथी तो यह भी बात संभव नहीं होती क्योंकि जब साधु आहार पात्रामें लेरहा था और झोली पात्राको संभालताथा के कान में उंगली लगाताथा कदाचित ऐसा कहो कि पात्रा जमीन पै रखाथा तो यह बात भी असंभव है क्योंकि अव्वल तो साधु गृहस्थ के घरमें झोली खोलकर पात्रा जुदा २ फैलावे नहीं कदाचित तुम अपनी बहरने की रीतिको अंगीकार करो तोभी असंभव हो जायगा क्योंकि उस बहराने वाले पात्रासे उपयोग रखोगे तो अन्य पात्रा में मक्खी आदिक आयकर बैठेगी अथवा बिल्ली आदिक आकर खाने लगेगी तो उनको उडानेसे या हटानेसे अंतराय कर्म होगा और उधर भी बहरने के पात्रा में उपयोग न रहेगा तब गृहस्थी भी वैसी बहराय देगा तो फिर साधु के अन खपत होने से परठनापडेगा सो इस रीति से लाय कर परठने की भगवत आज्ञा है नहीं इसीलिये हे भव्य! भगवत ने चौदे उपगरणो में सात उपगरण पात्र के गिनाये हैं उस रीति से जो गोचरी करने वाले साधु हैं उनको न तो मक्खी आदिक उड़ाने की अन्तराय कर्म बन्धे और न गृहस्थ के घरमें दुकान अर्थात् जुदे २ पात्रा फेलाने पड़े इसलिये यह शंका तुम्हारी न बनी दूसरा औरभी सुनो कि लौकिक में भी ऐसा कहते हैं कि जिस जगह अपने आचरण से विरुद्ध आचरण की बात हो तो उस जगह वो मनुष्य न ठहरे किन्तु चला जाय कदाचित जाने

का अवकाश न मिले तो कानों में उंगली देले जिससे वो शब्द न सुने क्योंकि यह अनुभव सब को बैठा हुवा है कि कानों में उंगली देने से शब्द नहीं सुनाई देता है तो फिर साधुजीने दोनों कानोंमें उंगली डाल लीनी तो फिर उस स्त्री का पति को वसी कराने में मंत्र जंत्र तंत्र की विधि पूछने से क्योंकर सुनी क्योंकि वह शब्द भी उस स्त्री ने जोर से तो कहा ही नहीं होगा क्योंकि ऐसी बातें तो धीरज से कही जाती है तो जोर की बात कानों में उंगली देने से नहीं सुनाई देती है तो धीरज की बात क्योंकर सुनाई देगी इसलिये यह तुम्हारा प्रश्न करना बुद्धि विकल जिन लिंग बिरुद्ध आचरण कदापि शुद्ध न होगा खैर जो तुम्हारा ऐसाही आग्रह है तो भी फिर तुम को बताते हैं कि जिसवक्त उस स्त्री ने पती वसी करण का शब्द उच्चारण किया और साधू ने कानों में उंगली लगाई जब वो कहकर चुप हो चुकी जब साधु ने कानों से हाथ हटाय कर मुख को मुंहपत्ती से (आच्छादन) कर के कहने लगा कि हम इन बातों को कान से भी नहीं सुनते तो बताने का ज़िकर ही क्याहै क्योंकि देखो जो शख्स कोई किसी से कोई बात पूछता है तो जब वो शख्स संपूर्ण कह चुकेगा तब दूसरा बुद्धिमान उसका उत्तर देगा और जो पूरी बात सुनेहीगा नहीं और बीच से उत्तर देगा उसे लोग मूर्ख कहेंगे इसलिये शास्त्र में कहाहै कि (एक समय नत्थी दोउपयोग) इसलिये हे भव्य! मुख बांधना सिद्ध न हुवा और तेरी शंका के माफिक एक शंका तेरी तरफ से उठाय के दिखातेहैं सूत्र का प्रमाण भी बताते हैं तेरे अज्ञान को दिखाते हैं पहिले उसको लिख कर पीछे तेरे को यथावत समझातेहैं भगवतीजी सतक २ उ० २ में देखो तुम्हारी जैसे बुद्धि विकल इस जगह भी इस सूत्रमें शंका करतेहैं सो सूत्र यह है (गाथा)

तहारुहेहीं कडाइहिं थेरेहिं सद्धिं विपलं पव्वयंसणियं २

दुरुहइ मेहघण सन्निगासं देवसन्निवायं पुढवीसीला पट्टयं पडिलेहइत्ता २ उच्चारपासवण भूमी पडिलेहइ २ त्ताः दब्भसंथारयं संथरइ २ त्ता पुरथ्थाभि मुहे संपालियंकणिसन्ने करयल परिग्गाहियं दसनहंसिरि सावत्तं मथ्थय अंजलीकट्टु एवं वयासी नमोथ्थुणं अरीहंताणं भगवंताणं जाव संपताणं ॥

अर्थ—अब श्री भगवान तथा रूप शक्तीवंत थीवरों का साथ लेकर विसतीरणी पर्वत ऊपर सहज २ में चढकर सजल मेघ जैसी स्याम देवतों रमणे योग्य पुहुवी शिला अर्थात् (पोखरशाला) पडिलेहकर बडनी तले धूनी तपास की भूमि कापडी लेहकर फेर पादोगमन अनसणथी पहिले उच्चा आदिक की भूमि अर्थात् जमीन को पूजना अर्थात् पडिलेहना ऐसाहै आचार जिनका फिर डाभका संथारा अर्थात् बिछौना करके पूरब सामो अर्थात् पूरब मुख करके पद्मासन लगाय कर हाथ दोनों जोड़कर अर्थात् दसों नख इकट्ठा मिलाकर मस्तक के विषय आवरतन अर्थात् माथे (लिलाट) के चढायकर ऐसा कहते हुवे कि नमस्कार हो अरिहँतको भगवंतको जाव संपत्ताणं कहता मुक्ती स्थान पावे जहां तक इस पाठ को देख करके मुख बांधने वाले ऐसा प्रश्न करते हैं कि दोनों हाथ जोड़ कर माथे को लगावे तो मुख खुला रहता है और जो मुख ढके तो माथे अंजली क्यों कर कर सके ऐसी कुयुक्ति लगाय कर मुख बांधनेको साबित करतेहैं इस कुयुक्ति का उत्तर जिनआज्ञा धारने वाले देतेहैं कि हे भोले भाई उचार वड़नीती भूमिका देखकर पीछे संथाराकरा फिर अनुक्रम करके एक एक रीति कर के दूसरी रीति कर के सभी क्रिया इकट्ठी ही करी तब विवेक शून्य बुद्धि बिचत्तण कहने लगा कि एक काम को करके पीछे दूसरा काम करेगा तो हे भव्य तूं इस जगह भी बुद्धि का बिचार कर मिथ्यात को परि हर कुगुरु की बात हृदय में मत धर अपने कल्याण की इच्छा कर क्योंकि देख जैसे तू कहताहै

कि एक काम को करके पीछे दूसरे काम को करेगा ऐसेही इसजगह भी समझ पेश्तर हाथ जोड़ कर मस्तक अंजली करके पीछे हाथ से मुख अचादन करके नमत्थुणं कहा इसी बात को नेत्र मींच कर बुद्धि से विचार कुगुरु का संग निवार सत गुरु कुं धार जिन आज्ञा को समार जिस से होवे तेरा निस्तार इस रीतिसे साधु का मुख बंधा हुवा नहीं क्योंकि प्रदेशी राजा चित्त स्वार्थी की संगमें बगीचामें गया और उस बगीचेके बीचमें श्री केशी कुमार आचार्य्य को देसना देता हुआ देखा और देखकर जो विकल्प उसके चितमें उठे सो विकल्प चित स्वार्थी से कहे उसी पाठ को श्रीरायपसेणी सूत्र से दिखाते हैं तुम्हारे मुख बांधने को उड़ाते हैं सूत्र की साक्षी बताते हैं मानो तो खुशी तुम्हारी हमतो जिन आज्ञा को जताते हैं (पाठ)

तएणंसेपदेसीराया रहातोपच्चोरुहइ चित्तेणंसारहिणासी द्धंआसाणसमंकिलामं पर्वाणे माणेपासइजथ्थ केसीकुमारेसम णेमहितिमहालियाएमणुसपरिसाएमझगएमहिया २ सदेणं धम्ममाइखमाणेपासित्ता इमेयारुवे अझथ्थिएसंकप्पेसमुपज्ज थ्थाजडाखलुभोजडंपजुयजुवासंति मुंडाखलुभोमुंडंपजुवासंति मुढाखलुभोमुढंयजुंवासंति अपंडियाखलु भो अपंडियापजु वासंति निविणाणाखलुभोनिविणाणं पजुवासंतिसेकेसणएस पुरीसे जडमुंडे मुढे अपंडिएनिठवणाणेसीरीएहिरिएओवगएओ त्तप्पसिरिए एसणंपुरीसेकिमाहारेतिकिंखायइ किंपयइकिंपय थ्थःतिजंणंएसपुरिसमहातिम हालीयाएमणुस्सपरिसाएमझ गते महियाए २ सदेणंवुयाइ एवंसंपेहिइ २ त्ता चितसारहिं एवं वयासी चित्ताजडाखलु भोजड पजूवा संतिजावबुयाइ ॥

अर्थ—तिसपीछे ते प्रदेसी राजा रथसे उतरकर के चित्त स्वार्थीके साथ घोडों को किलामना अर्थात् टहलाते हुए फिरते २ देखते २ जहां श्री केशीकुमार समोसरण अर्थात् मोटी

महा विस्तारकरके मनुष्यों की परखदामें बैठे हुए मोटे अर्थात् ऊंचे शब्द करके धर्म देसना देते हुए उस परखदा को देखकरके ऐसा कहे सो हम आगे कहते हैं आत्माके विषय संकल्प उपजा यह मूर्खपनसे निश्चय करके मूर्खकी सेवा करते हैं मुंडक मस्तक मुंडाहुयातो मुंड प्रत्ये निश्चय सेवन करहै ते मुंड अर्थात् मूर्ख हैं अपंडित क॰ अपंडित प्रत्यय सेवै है यह पुरुष जडको सेरहे हैं मस्तक मुंडत अपंडित ने सेवे हैं निर्विज्ञान रहित शोभा करी सहित देदीप्यमान शरीर यह पुरुष कैसा है कहांसे आहार करै है कैसी चीज खाय है कहांसे पीवे है सेवकको खर्च कहांसे देता है जिसकरके यह पुरुष मोटा महा वीरता मनुष्यों की परखदा मांही बैठा है और मोटे २ शब्द करके बोले है ऐसा बिचार मनमें चिंतवन कर के चितस्वार्थी से ऐसा कहता हुवा कि हे चित्र जड़ पुरुष घणा निश्चय अहो एक जड़ मूर्ख प्रते सेवे है यह सभा में बैठा हुवा देसना दे रहा है तिस रीति के पूर्व मनमें विकल्प सो सर्व बिकल्प चित्त स्वार्थी से कहता हुवा परंतु उन बिकल्पों में ऐसा बिकल्प उस प्रदेसी राजा को न उठा कि यह मुख बंधा मुख बांधे हुवे कथा करता है अथवा चित्त स्वार्थी से भी ऐसे बचन से कहा कि हे चितस्वार्थी यह मुख बंधा बैठा हुवा क्या कर रहा है ऐसा भी न कहा और श्री केशी कुमार ने भी प्रदेशी राजा से न कहा कि तुमने ऐसा चिंतव्या कि यह कौन है मुख बंधा क्योंकि प्रदेशी राजा ने मुख बांधने का बिकल्प अपने चित्त में न किया इसलिये श्री केशी कुमार ने भी न कहा क्योंकि देखो जिन का मुख बंधा होता है उनको प्रत्यक्ष अजान लोग कहते हैं कि यह मुख बंधा कौन है इसलिये मालुम होता है कि मुख बांधना जैन धर्म का लिंग नहीं किन्तु अन्य लिंग है इस रीति से श्री उत्तराध्येनजी के २० वें अध्येन राजा श्रेणिक अनाथी मुनि को देखकर उनके रूप का वर्णन करताहुआ आचार्य्य को पाया सो वर्णन चौथी पांचवीं छठी

गाथा में देखो हमने तो ग्रंथ बढजाने के भय से नाम मात्र लिखा है जो उस जगह मुख बंधा हुआ होता तो राजा श्रेणिक येही विचारता कि इस रूपवान पुरुष ने मुख क्यों बांधा है सो ऐसा बिचार उन गाथों के अर्थ में नहीं इसलिये जैन के साधु को मुख बांधना असंभव है और भी देखो इस उतराध्येनजी के १८ वें अध्येन में पाठ है सोभी दिखाते हैं (पाठ)।

मयछुभी ताहयगओ किंपिल्लु जाणकेसरे भीएसंते मिएतथ्थ वहइरसमुछिउं ३ अहकेसरंमी उज्जणे अणगारेतवोधणे सझाय झाणसंजुते धम्मझाणं झियाएइ ४ अफोवमंडवंमी झायइझवियासवे तस्सगएमिएपासं वहइसे नराहिवे ५ अह आगसओराया खिप्पमागम सोतहिं हएमीएउपासित्ता अणगारं तथ्थपासइ ६ अहरायातथ्थसंभंतो अणगारो मणाहओमएओमंदपुन्नेणं रसगिद्धेण घिथ्थुणा

अर्थ—मृगको देखकर घोड़े चढ कर कांपील पुर नगर संबंधी केसरी उध्यान के अंदर जाता हुवा कितनेक मृगों को वहां मारते हैं मांस की लोलपता से अब केसरी तो ध्यान के अंदर अणगार मुनि तथा तप उद्यम सहीत स्वाध्याय धर्म ध्यानादिक ध्यान सहित धर्म ध्यान ध्याय रहे हैं एकागृहचित करके रुंखेकरी व्याप्पु अर्थात् दरखतों से ढका हुवा नागर बेल का मंडप है धर्म ध्यान होवे है आश्चर्य खपायाहै ऐसे मुनी पास मृग आया मृग बंधा हुवा था वो मृग मुनिके पास आया वो राजा अब घोडे पर चढा हुवा जल्दी आकर उस राजा ने वह मरा हुआ मृग अणगार मुनि के वहां देखा अब राजा वहां जाता हुवा ऐसे जानता हुवा अणगार मुनि थोडा साहना है ये मृग मुनि का होगा वो देख कर मैं थोडा पुन्य का धनी हूं मांस के लौलपी पने से जीव घात किये यहां संजती मिथ्या दृष्टि था उसको अणगार मुनि

कह कर बुलाया है उसने ऐसे नहीं पहचाना कि यह साधु जैन का है जो मुनि का मुख बंधा हुआ होता तो राजा ऐसा जानता कि यह तो जैनका साधु है जैनके साधु मृग नहीं रखते ऐसा जानकर चला जाता इस प्रमाणसे भी मुख बंधा हुआ संभव नहीं होता इस सूत्रके अर्थको बिचारो क्यों हट कदाग्रह धारो इस तोबरे को उतारो जिससे होय तुम्हारो निस्तारो इस वाक्यको सुनकर मुख बांधने वाले कहते हुए कि तोबरा तो असली घोडे के बंधता है कुछ गधेके नहीं बिना मुख बांधे वायुकाय की हिंसा क्योंकर साधु बचावेगा इसलिये मुख बांधनाही ठीक है (उत्तर) भोदेवानुप्रिय! तैंने जो कहा कि तोबरा असली घोडे के बंधता है कुछ गधेके नहीं सो तेरा कहना ठीक है परंतु इस तेरे वाक्य को सुनकर हमको करुणा उत्पन्न होती है कि मनुष्य जाति में उत्पन्न होकर भी उत्तम कुल ओसवाल पोरवाड आदिक कुलको पायकर जैनी नाम धरायकर क्यों तिरियंचपशु जातिमें मिलते हो लज्याभी नहीं पाते हो क्यों अपने कदाग्रहको जमाते हो खोटी कुतर्कों को चलाते हो हमतो जानते हैं कि तुम मनुष्य हो परंतु तुम अपने आपही पशु बनंजातेहो क्योंकर हम तुम्हारी बुद्धि विचक्षण को समझावें और जो तुमने कहा कि मुख बांधे बिदून वायुकाय की हिंसा क्योंकर बचेगी यह तुम्हारा कहना भी अज्ञान सूचक कदाग्रही मालूम देता है क्योंकि जिस रीतिसे वायुकाय की हिंसा शास्त्रों में कही है सो रीति दिखाते हैं प्रथम अंग श्री आचारांगसूत्र श्रुतस्कंद २ अध्येन १ में देखो सोही दिखाते हैं पाठः—

सेभिखुवा २ जावपाविठेसमाणे सेज्जपुण जाणेज्जा असणंवा ४ अच्युसिणंवा असंज्जए भिख्युपाडियाए सुवेणवाविहुयणे णवा तालियंटेणवा पत्तणवा पत्तभंगेणवा साहाएवा साहा भंगेणवा पिहुणेणवा पिहुणहथ्थेणवा चेलेणवा चेलकन्नेणवा

हत्थेणवा मुहेणवा फुमेज्जवा वीएज्जवासेपुव्वामेव आलोएज्जवा आउसंतिवा भगणीतिवा माएतंतुमं असणंवा ४ अच्चुसिणं सूएणवा जावफूमाहिवा अभिकंखसीमदातु एमेवादल थाहि सेसेवंवदंतस्स परोसुवेणवा जाववीपीत्ता आहट्टुदल एज्जा तहप्पगारं असणंवा ४ अफासूयं जावणोपडि गाहिजा

अर्थः— से भीखुवा कहतां साधु साध्वी गृहस्थ के घर में प्रवेश करे उसवक्त जो साधु अशणादिक चतुराविधि आहार देने के वास्ते अतिउत्कृष्ठ शीतल करने के अर्थ गृहस्थी साधुके लिये सूप करके (सूपड़ा वा छाजला) अथवा वीजना (पंखा) अथवा खजूरपत्रादिक करके अथवा पत्ता करके अथवा पत्ताके टुकड़ा कर के अथवा शाखा (डाली) करके अथवा शाखा का एक भाग लेकर अथवा मोर के पंख की बीच की मीजी अर्थात् चंदोया अथवा वस्त्र करके अथवा वस्त्र के पल्ले से अथवा हाथ से अथवा मुखसे अथवा फूंकसे इत्यादिक रीति कर के शीतल करे तो साधु पहिले (आलोक) देखे सावधानीसे देखे तब गृहस्थ ने ऐसा कहा सो दिखाते हैं आयुष्मान् अथवा भगिनी (बहिन) अशणादिक अति उष्ण जान कर जो वीजना से आदि लेकर जो पाठ कह आये हैं कि मुखसे फूंक लगाकर जो हमको देना बांचेहो सो वायुकाय उदारिक बिना दे अर्थात् वायुकाय की हिंसा होने से जाव सूप से लेकर मुख से फूंक लगाय कर इस रीतिसे शीतल करके अशणादि चतुर्बिध अपासुक यावत न कल्पे अर्थात् इस रीति से साधूको आहार न लेना इस पाठ के देखने से तो श्री वीतराग देव वायु कायकी दया कही गृहस्थी मुनि को बीजना आदि से लेकर मुख से फूंक लगाय कर मुनि को देवेतो साधु को नहीं कल्पे कदाचित कोई खुले मुख से कोई बोलकर मुनि को अशणादिक चतुर्विधि आहार देवेतो सुख करके ले अब जो कोई ऐसा कहते हैं कि खुले मुख से बोले तो वायुकाय की हिंसा

होती है तिसको बुद्धि पूर्वक बिचार करना चाहिये कि जो दातार अर्थात् देने वाला पृथ्वी पानी आदिक जीवों के विराधना अर्थात् संघटा करले तो देने वाला असूजता होजाता है फिर उसके हाथ से साधु आहार आदिक नहीं लेतो खुले मुख बोलके मुनि को दान देवे तो दातार असूजता क्यों नहीं होय सोतो नहीं होता क्योंकि उघाड़े मुख बोलनेवाले के हाथसे भी साधु आहार लेते हैं कदाचित्त कोई हटवादी ऐसा कहे कि हम नहीं लेते यह बात कहना उसका असंभव है क्योंकि देखो एक हाथ में तो बरतन है और दूसरे हाथसे बहराता है अथवा दोनों ही हाथोंसे कोई चीज बहराता है और दूसरी चीज की निमंत्रणा करता है इसलिये यह जो तुम कहतेहो खुले मुख बोलनेसे वायु-काय की हिंसा होती है यह कहना ठीक नहीं जो उघाडा मुख बोलनेसे वायुकाय की हिंसा होती तो जिसे फूंकमारकर आहार साधु को लेना मना किया वैसेही खुले मुख बोलने वाले के हाथ से आहारादि लेना मना करते इस बातको बुद्धि पूर्वक देखो मिथ्यात को क्यों पेखो दूसरे देखो इसी रीतिसे श्रीदसवैकालक अध्येन ८ में वायुकाय की हिंसाके वास्ते पाठ लिखा है सो भी दिखाते हैं पाठः—

टालियंटेणपत्तेणं साहाविहुणेणवा नवीएज्जअप्पणो कायं बाहिरंवाविपुग्गलं ॥

अर्थः— बीजना अर्थात् पंखा अथवा पत्र अथवा वृक्षकी शाखा अर्थात् डाली करके ना बायरो करे अपनी काया अर्थात् शरीर को अथवा ऊना पाणी तथा दूध ऊपरकी लिखी बातोंसे ठंडा करके नहीं पीवे इस रीतिसे वायुकाय की दया अर्थात् हिंसा में श्रीवीतराग देव मने किया परंतु खुले मुख बोलनेसे तो वायुकाय की हिंसा कही नहीं तो फेर तुम्हारा कहना क्योंकर बनेगा कि खुले मुख बोलने में वायुकाय की हिंसा होती है इसलिये हे

भोले भाईयो ! कुछ बुद्धि का बिचार करो और वायुकायके मध्य देखना होय तो इसी दसवैकालक के चौथे अध्येन में देखो मिथ्यात को मत पेखो जिन आज्ञा का करो लेखो और भी हम तुमको दिखाते हैं कि जो तुम लोग कहतेहो कि उघाडे मुख बोलनेमें वायुकाय की हिंसा होती है जिसमें तीन पाठ तो हम तुम्हारे को दिखाय चुके कि खुले मुख बोलने में वायुकाय की हिंसा नहीं फिरभी चौथे पाठ में दिखाते हैं श्रीनसीत सूत्र अध्येन१७ उद्देशा प्रश्न २५५ में दिखाते हैं:—

जे भिक्खु अच्चुसिणं असणंवा मुखेणवा विहुणेणवा तालियंटेणवा पत्तेणवा पतभंगेणवा सहाएणवा सहाभंगेणवा इताादिमाहट्टु दिजमाणं पडिग्गाहोइपडिग्गाहंतंवा साइज्जइ॥

अर्थ— जो कोई साधु साध्वी अति उष्ण अर्थात् गरम (करके अशनादिक चार प्रकार का आहार अथवा पानी मुख ताता) फूंक देवे अथवा पंखा करके अथवा कपडा करके अथवा पत्ता करके अथवा पत्ताके टुकडा करके अथवा शाखा करके अथवा शाखा का एक देश सेती शीतल करे अथवा मुख की फूंक देकर शीतल करे और शीतल करके अशनादिक लेवे अथवा लेनवाले को अनमोदे अर्थात् अच्छा जाने तो लन्घु चौमासी प्रायश्चित आवे इसी रीति से आचारांगजी मध्ये जो कोई वायुकाय की हिंसा निमित्त पंखा आदिक से अथवा मुख से फूंक लगाय करके साधु को अशनादिक दे कदाचित साधुले तो साधु का सावीद लगे जो साधुको सावीद लगे तो मुनि को प्रायश्चित आवे ऐसा नसीथ सूत्र में कहा है इस बात को बिचारो कु गुरू का संग निवारो समगत सेली धारो जिससे होवे कल्याण तुम्हारो मोपत्ती बांधने की खैंच को हिदे से डारो क्योंकि देखो जो तुम मोपत्ती अष्ट पहर मुख पर बांधतेहो तो उसमें रखनेसे थूक से आली मोपत्ती हरदम रहती है उस आलपनों में छमोर्छम पंचेन्द्री मनुष्य पैदा

असंख्यात होते हैं और अंतर मुहूर्त में मरजाते हैं उनकी हिंसा तुमको लगती है सोही दिखाते हैं कि पन्नयणासूत्र में पाहिले पद में कहा है सोही दिखाते हैं:—

सेकिंतंमनुस्सा मणुस्सादुविहा पणत्तासमुछिछमणु· स्साय गभकंतियायमणुस्साय सेकिंतंसुमुछिछम मणुस्साकहिणं भंते समुछिछमणुस्सासमुछिंतिगोयमा अंतोमणुस्सखेत्तपणया लिसायजोयणसहस्ससु अढाइजेसुदिवस्ससमुद्देसुपणरस कम भूमीसुतीसाय अकम्मभूमीसु छप्पणायअंतर दिवएसु गभव कंतिथ मणुस्साणं चेव उच्चारेसुवा १ पासवणेसुवा २ खेले सुवा ३ संघाणेसुवा ४ वंतेसुवा ५ पीत्तेसुवा ६ पूयसुवा ७ सोणीयसुवा ८ सुक्केसुवा ९ सुक्कपुग्गलपरिसाडेसुवा १० वीग यजीवकलेवरेसुवा ११ इथिपुरीससंयोगेसुवा १२ नगरनिधव णेसुवा१३सव्वसुचेवअसूइठाणेसुवा१४इथ्यणंसमुछिममणुस्सा समुथ्थंति अंगुलस्सअसंखिज्जभागमित्तिए ओग्गहणाएअस न्निमीछादिठीसव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपत्तगाअंतोमहुत्ताउया चेवकालंकरेति सेतंसमुछिममणुस्सा ॥

अर्थ—से कहता कैसा मनुष्य ? मनुष्य दो प्रकार के होते हैं छमोर्छम मनुष्य दूसरा गर्भज मनुष्य से कहता हैं पूज्य स्वामी छमोर्छम मनुष्य किसको कहना चाहिये और कहां उपजता है जब भगवत कहते हुवे कि हे गौतम मनुष्य क्षेत्र में पैंतालीस लाख जोजन अर्थात् अढ्ढाई द्वीप समुद्र में पंदरह क्रम भूमि तीस अक्रम भूमि छपन अंतर द्वीपके विषय जो गर्भज मनुष्य के मलमूत्र आदि में उपजते सोई देखते हैं १ भृष्टा २ पेशाव (लघूत नाड़ाछोड़) में ३ मुख के मैल खंखार (थूक) ४ नासिका का मैल अर्थात् सेडे में ५ वमन अर्थात् उलटी होने में ६ पितका लेपी लेपडते हैं ७ पसीना के विषय ८ लोही के विषय ९ वीर्य के १० सूखे मनुष्य के पुदगल में भीजने से जीव रहते अर्थात् मरे मनुष्य के पुदगल में स्त्री और पुरुष के

संयोग से दोनों के रुधिर और वीर्य भेला होने से नगर के रस्ते अर्थात् शहरोंकी मोरीमें औरभी अनेक तरह के अपवित्र स्थान अर्थात् सर्व जगह मनुष्योंका अशुचि स्थान अपवित्र सर्व जानलेना ये चौदह बोलतो गिनाये हैं औरभी अशुचि स्थान सर्व जानलेना इन सब में छमोछम मनुष्य उत्पन्न होते हैं और उन मनुष्योंकी देह अंगुल के असंख्यात वें भाग प्रमाण होती है असनी अर्थात् मनच्छर के रहित मिथ्या दृष्टि होते हैं और उनका शरीर पर्याप्ता अंतर मुहूर्त्त के आयुखावाले होते हैं ये छमोछम मनुष्य पंचेन्द्री होता है ऐसे सर्वज्ञ देव वीतरागने अपने केवल ज्ञान में देखातो इस पाठ के देखनेसे जो सदा मुखपत्ती मुख पर बांधे रहते हैं उनके थूकादिक मुखके मैलसे भीजाती है सो उसमें पंचेन्द्रिया जीवकी हिंसा लगती है वोही बांधने वाले को लगती है इसलिये मुखका बंधन छोडो क्या जैन धर्म को भंडो कुमती को क्यों मंडो इस प्रमाण को सुन मुखबांधने वाले कहने लगे कि आपने प्रमाण दिया सोतो ठीक है परंतु मुखकी भाफ गरम है जिस्से जीवकी उत्पत्ति नहीं होती तब सिद्धांती साक्षी देने वाले कहते हैं कि भोदेवानुप्रिय! मति कल्पना को छोडो कु गुरुका संग तोडो सुगुरु की वाणीको हिरदे में जोडो क्योंकि देखो श्री वीतराग सर्वज्ञ देवने तीन प्रकार की योनि कही है सोही दिखाते हैं पाठः—

समुछिममणुस्साणभंतेकिंसितजोणि ओसणाजोणी सीतो सीणाजोणी गोयमा तीविहाजोणी सूत्रपन्नवणापदपाहिले मध्येदेखो

अर्थः—श्री गोतमस्वामी पूछते हुए कि हे पूज्य छमोछम मनुष्य की शीत अर्थात् ठंडी जोनी हैं अथवा गरम जोनी है अथवा कुछ शीतल कुछ गरम जोनी है तब श्री महावीर स्वामी कहते हुए कि हे गोतम तीनों जोनी के छमोछम उपजते हैं इस कहने से तीनों जोनी ठहरी तो हे मुखबांधनेवालो तुम्हारी मुंहपत्ती का

बांधना और मुखकी भाफ लगना उनदोनोंका इकट्ठा होना इन तीनों जोनी के भीतर अथवा चौथी कोई और जोनी है जो वीतराग की कही हुई तीनों जोनी है तो तुम्हारे को तो पंचेन्द्री मनुष्य की हिंसा लगती है इसलिये इस मुख बांधने को तजो जिन आज्ञा को भजो लौकिक विरुधसे भी कुछ लजो क्योंकि मुख बांधना लोगों में अच्छा नहीं लगता क्योंकि बिहावना अच्छा नहीं लगता है इन बातों को सुनके मुखबांधने वाला चौंक कर बोला कि तुम मुखबांधना तोते की तरह टेंटें करते हो मुखतो अच्छी चीजका बंधता है कुछखोटी चीज का नहीं उत्तर- भोदेवानुप्रिय! इस्से मालूम होता है कि तेरेको विवेक शून्य बुद्धि विचक्षण प्रत्यक्ष अनुभव विरुद्ध अज्ञान भराहुआ बचन बोलता है क्योंकि देखो हम तेरेको लौकिक प्रत्यक्ष दिखाते हैं सो आंख मीचकर बुद्धिका विचार कर बाह्य नेत्रोंसे देख कि जो अच्छे अच्छे पकवान मिठाई आदि नानाप्रकार की वस्तु हलवाई लोग बाजार लगाकर थालों में जमाकर रखते हैं और जो निरस चीज है उसको दबा देते हैं इसरीतिसे सराफ लोग भी रुपे पैसे सोना चांदी जवाहिरात आदि सर्व चीज उघाडी दुकान पर लगाते हैं और उन अच्छी अच्छी चीजों को देखकर ग्राहक लोग उनके पास जाते हैं इसी रीति से बजाज भी अच्छे २ कपडे चमकदार भडकदार बुकचो में से खोलकर वायरा लगाते हैं इसी रीतिसे परचूनी बिसायती दूकानदार आदि सर्व कारवाले अच्छी २ चीज खोलकर रखते हैं और जो निरस अथवा खोटी चीजों को सब कोई छिपाते हैं बांधते हैं सोही दिखाते हैं किसके मगज में कीडे आदिक पडे और पीनस का रोग हो तो वह मनुष्य अपनी नाक को ढांके हुए रहता है क्योंकि उसकी नासिका से दुर्गंध आती है इसलिये यह नासिका बांधता है अथवा किसीका होठ आदिक फूल जावे अथवा दांतों में कीडा पडे मसूडे फूले अथवा होठ सुफेद होजाय घाव होजाय वा कटजाय अर्थात् लोगों को देखनेसे बुरा लगे वो

मनुष्य अपने ऐब दबाने के वास्ते बांधता है वा ढकता है इस रीति से किसी के घाव फोडा फुन्सी गूमडा आदि होते हैं उसी जगह पट्टी बांधी जाती है क्योंकि उस खून राद होनेसे दुर्गंध निकलती है इसलिये उसको पट्टीसे बांधते हैं परंतु अच्छी जगह पर कोई नहीं पट्टी बांधता है तीसरा और भी सुनो कि जो मुर्दे आदि का शरीर है उसको हिंदू वा मुसलमान सबकोई ढांककर अर्थात् दबाकर लेजाते हैं और जब बिवाह आदि होता है तब बींद बींदणी वा लाडा लाडी वा दुल्हा दुलहिन उनको सबकोई अच्छे २ कपडे व जेवर आदि पहराय कर बाजारों में व गलियों में हाथी घोडे पालखी तामजाम आदि अनेक सवारियों पै खुले हुवे लेजाते हैं कोई उनको ढककर नहीं लेजाते हैं चौथा और भी सुनो कि जो महतर भंगी आदिक पाखाना साफ कर मैला उठायकर ले जाते हैं वेभी उस मैलेको कचरा चारा खोडी से ढांक कर लेजाते हैं अथवा गृहस्थी के बालक आदि झाडे जाते हैं उसको भी राख गेर कर ढांक देते हैं अथवा कोई म्लेच्छ आदि बुरी वस्तु को बाजार आदि में लेजाते हैं तो वोभी ढांककर ले जाते हैं इसलिये हे भोले भाईयो जो तुम लोग कहते हो कि अच्छी चीज का मुख ढांका जाता है सो ऊपर लिखे प्रत्यक्ष प्रमाणों से अच्छी चीजका बंधना नहीं बने किंतु खोटी का ही बांधना बनता है इसलिये कुमति को निवारो सुमति को सम्भारो मनुष्य जनम मत हारो संगत सेली को धारो ये मानो बचन हमारो छोड़ो कुगुरु कोचारो कुलिंग कूं छोड़ कर सुलिंग कूं धारो जिस से होय तुम्हारो निस्तारो इस बात को सुनकर मुंह बांधने वाला कहने लगा कि आप कहते हो सो ठीक है परन्तु वायुकाय की हिंसा नहीं होती तो मुपत्ती किस वास्ते कही है? उत्तर भोदेवानु प्रिय! हमने तुम्हारे को सूत्र का पाठ लिख कर दिखाया तो भी तुम्हारी समझ में न आया नाहक झगड़े को मचाया तुम को कुगुरू ने कैसा भरमाया हमने इतनी तुमको युक्ति और प्रमाण बत-

परंतु तुम्हारी समझ में किंचित भी न आया हे भोले भाइयो शास्त्रों में आठ प्रकार की बर्गना कही है सोही दिखाते हैं १ उदारिक वरगना २ वेक्रीय वरगना ३ आहारिक वरगना ४ तेजस वरगना ५ भाषा वरगना ६ उसास वरगना ७ मन वरगना ८ कारमान वरगना ये आठ वरगना में से चार तो बादर अर्थात् मोटी है और चार अर्थात् भाषा १ स्वास २ मन ३ कारमान ४ ये शूक्ष्म अर्थात् छोटी बरगना है पहले की चार बरगना में बीस गुणपाते हैं पांच बर्ण ५ रस २ गंध ८ स्पर्श ये बीस गुण उदारीक बिक्रये आहारीक २ तेजस मेंपामे इसलिये इनकूं बादर अर्थात् मोटी कही और पांच रस ५ बर्ण २ गंध ४ स्पर्श ये सोलेगुण भाषा १ उश्वास २ मन ३ और कारमान ४ सोले गुण पामे इसलिये इनकूं सूक्ष्म अर्थात् छोटी बरगना कया इस वास्ते बुद्धिमान आत्मार्थी बिचार करना चाहिये कि वायुकायका जीव उदारिक शरीर वाला है सो उदारिक वरगना से बनाहुवा है सो उसमें आठ स्पर्श है और भाषा बरगना में चार स्पर्श है तो फेर भाषा से वायुकायकी हिंसा होती है ये बात बुद्धिमानोंकी बुद्धि में असंभव है क्योंकि आठ बर्ष के बालकको चार बर्ष का बालक नहीं मार सके इसलिये कुछ बुद्धि का बिचार करो पक्षपात को परिहरो मिथ्यात्व को पुष्ट मत करो जैन लिंग को धारण करो अन्य लिंग को परिहरो हम तो कहने वाले आगे मरजी तुम्हारी इसपर मुख बांधने वाले कहते हैं कि भाषा वरगना चोफर्सी है परंतु होठों से बाहर शब्द अटफर्सी होजाता है इस-लिये वायुकाय की हिंसा कहते हैं अरे भोले भाइयों होठों से निकलकर भाषा वरगना का शब्द अठफर्स होजायगा ऐसा किसी सूत्र में लिखाहै तो हमको भी बतलाइये क्यों नाहक बुद्धि विकल जतलाई है क्यों अपनी आपही हंसी कराई है सूत्र के परमाण बिन अटफर्सी बताता तब मुहपत्ती बांध करके वायुकाय की हिंसा क्योंकर बचाई कदाग्रह कूं छोडो कुछ समझोरे भाई क्योंकि देखो

श्री उत्तराध्येनजी अध्येन १६ वामें गाथा ४१ में लिखा है सो पाठ दिखाते हैं ।

जहदु:खंभरेउजे होयवायस्सकोथले तहादुखंकरे उजे कीवेणसमणतणं ॥ १ ॥

अर्थः—जैसे दुख करके भरवोजो होय बायरे का वस्त्र की थेली अर्थात् कोथला में न भराय तैसेही संजम पालना भी मंद संघेन अर्थात् कायर पुरुषों से यतीपना पालना बहुत मुशकिल है इस कहने से मालुम होता है कि बादर वायु वस्त्रों के कोथले में नहीं भरी गई अर्थात् न रुको तो तुम्हारी मुहपत्ती एक तरफ बांधने से और तीन तरफ खुली रहने से क्योंकर रुकसक्ती है क्योंकि कोथला चारों तरफ से बंदहै इसलिये तुम्हारे कहने से ही मालुम पड़ता है कि होठोंसे बाहर निकली अटफसीं होजाती है तो वायुकाय की हिंसा क्योंकर बची जब मुहपती बांधना भी न जची लौकीक में बिरुद्ध और जिन आज्ञा त्रिपरीत मुख बांधनेसे भी वायुकयकी हिंसा लगती रही ये तुम्हारी मनोकल्पित तरक सूत्र के परमाण से बही अरे भव्य जीवों मानो तो हमारी कही हमने कितनी देखाई सूत्रों की सही अनुमान (१७१२) वर्ष पीछे जैन धर्म से बिरुद्ध मुखपर मुहपती बांधना ये बात चली नहीं छोड़ो वा मत छोडो हमने तो करुणा कर इतनी शिक्षा कही मानो तो होगा कल्याण समझो ये बात सही इतनी बात सुन कर मुहपत्ती बांधने वाले हटग्राही बालकों कीसी तरक करके कहते कि आप सब कहतेहो परंतु बुद्धी का बिचार नहीं करते क्योंकि देखो जिसवक्त में गोतम स्वामी गोचरी को गयेथे उस वक्त यवन्ता कुमार ने गोतम स्वामीजी की उंगली पकड़ के अपने घर बहराने लेगया और वहां से लाडू बहराय कर श्री गोतम स्वामी के साथ उंगली पकड़े हुवे साथ में चला और रस्ते में कहने लगा कि हे स्वामी नाथ आप के पास झोली में बोझा बहुत है सो मेरे को दे

दीजिये मैं ले चलूं उस वक्त में श्री गोतम स्वामी ने समझाया उस वक्त एक हाथ में झोली थी और दूसरे हाथ की उंगली देवता कुमार पकडे था तो फेर मुंहपती किस जगह थी क्या वे उघाडे बोलते थे इसलिये क्यों हम को खोटी बात समझाते हो अपनी बात को गमाते हो पकडी टेक हमारी को छुडाते हो इसी से हमारा मुख बांधना सिद्ध होगया उत्तर भोदेवानु प्रिय! हम को मालुम हुआ कि मिथ्यात्व रूप प्याले की तुमने घुटकी लीवी अरे भाई बुद्धि का विचक्षणा गुणा छोड़ हृदय नेत्र को खोल मिथ्या वाक्य मत बोल सूत्र के अर्थ को तोल जिस से मिले तुझ को जैन धर्म अमोल क्यों कु गुरु के बहकाने से होता है डांवां डोल अब हम तेरे को समझाते हैं कि देखो अव्वल तो शास्त्रों में कहा है कि साधु रस्ते चलते बोले नहीं क्योंकि रस्ते चलते बात करे तो इरिया सुमती न बने क्योंकि एक समय नथी दो उपयोग इसलिये रस्ता की बात तो तुम्हारी सिद्ध न हुई अब दूसरी सुनो कि जिस रीति से ढूंढिया लोग गोचरी को जाते हैं और हाथ में झोली को पकड नीचे को लटकाते हैं गृहस्थियों के घर में पात्रों को बखेर अपनी दुकान को लगाते हैं साधु आहार गृहस्थी को दिखाना भगवत ने मने किया परंतु ये तो घर घरमें दिखाते हैं ऐसा श्रीगोतम स्वामी थोडाही करते थे क्योंकि वे तो आत्माअर्थी जिन आज्ञा आराधक प्रथम गणधर सब में प्रधान परवर जिस रीति से साधु के चउदे उपगरण कहे हैं उसी रीति से रखते थे और झोलीमें पात्रा रख ढूंढियों की तरह नहीं लटकाते थे कोनी और पोंचे के बीच में झोली को अटकाते थे ऊपर से पटला पटकाते थे गृहस्थियों को अपना आहार नहीं देखाते थे इस रीति से गोचरी को जाते थे इसी रीति से जो यवंता कुमार ने एक हाथ की उंगली पकडी तो जिस हाथ में झोली लिये हुये थे उस हाथ में मोहपत्ती होगी क्योंकि अंगूठा और उंगली खाली रहती है क्योंकि साधुओं की झोली कोनी और पोंचे के बीच में रहती है तो तुम्हारे को क्योंकर संदेह

हुवा कि मुहपत्ती किस जगह थी दूसरा और भी सुनो कि जिस हाथ की उंगली यवंता कुमार ने पकडी उस हाथ की उंगली में मुहपत्ती रखे तो क्या हरज है क्योंकि जिस हाथ में मुहपती थी उस हाथ की उंगली यवंता कुमार पकडे रह्या और झोली वाले हाथ से मुख को आच्छादन करके उस को खड़ाहो जवाब दीना होगा इस लिये तुम्हारी तरफ न बनी तीसरा और भी हम तुम को दिखातेहैं भगवती सूत्र शतक २ उद्देशा५ बतातेहैं तुम्हारी खोटी तरक को उडातेहैं श्री गोतमस्वामी के आचार को दिखातेहैं

पाठः—तएणंसेभगवंगोयमे छठखमणपारणंगांसि पढमाए पोरसीए सझायंकरेइ वीयाए पोरसीए झाणं झीयाएं तीयाए पोरसीए अतुरीय मचवलमसंभंते मोहपोतियं पडिलेहि २ त्ता भायणायं बथ्थाइ पडिलेहइत्ताभाइणायं पमज्जइ २ त्ता भायणाय ओग्गाहेइ२ त्ता जेणेवसमणे भगवंमहावीरे तेणेव ओवागछइ २ त्तासमणंभगवंमहावीर वंदइ नमंसइ एवंवयासी।

अर्थः—तिसके बाद भगवान श्री गोतमस्वामी बोले अर्थात् दो उपवास के पारने के दिन पहिली पोरसी में सझाय करते हुवे और दूसरी पोरसी में ध्यान कीया और तीसरी पोरसी में उतावल अर्थात् चपल पणा रहेत समता करके सहेत मुखवस्त्र का पडलेह करके भाजन अर्थात् पात्रा प्रमुख और वस्त्र पड़लेह अर्थात् प्रमार्जन करके जिस जगह श्रवण भगवान श्री माहावीर स्वामी थे जिस जगह जाय करके श्रवण भगवान श्री माहावीर स्वामी को बंदना नमस्कार करके ऐसा कहते हुवे इस पाठसे मुहपत्ती पूंजनी अर्थात् पडीलेहण करनी तो कही परंतु खोलनी बांदनी न कही और आठ पुड़ बनाकर डोरा बीचमें घाल कर बांधना न कह्या फेर न मालुम सूत्र के बिना आठते करना और मुंडे पै बांधना ऐसा चलाया हमकुं इस बातपे आश्चर्य आया हमने तुम्हारा कुछ मतलब न पाया तुमने जाने क्या नफा उठाया नाहक क्यों जिन

धर्म्म को लजाया अभी जिन धर्म्म का असल भर्म न पाया जैन लिंगसे अनालिंग को बनाया अजान स्त्री और बालकों को डराया गांवमें घुसते वक्त कुत्तों को भुसाया जैन आचार्यों के किये हुवे ओसवाल पोरवाड़ जैनियों को जालमें फँसाया तुमतो डुबे और उन्हों को क्यों डुबाया अनुमान ढाईसे वर्ष से पाखंड मचाया जैसी तुम्हारी क्रिया थी तैसाही ढूंढक नाम पाया मिलना जैन धर्म इससे ढूंढ्या कहलाया इसलिये हे भोले भाई इस हट कदाग्रह को छोड मिथ्यात्व से मन मोड़ शुद्ध जैन धर्म्म को अंगीकार कर के अपने कल्याण को करो जैन धर्म्म में मुख बांधना नहीं किन्तु साँख्य मत के भेदमें बीटा मत के संन्यासी लोग काष्टकी मोहपत्ती से मुख बांधते थे सो उन्हींके मत में बनारसी नगरी का सोमल ब्राह्मण पेशतर सोमल ब्राह्मण ने श्रीपार्श्वनाथ स्वामी के पासमें पांच अनुवृत्ति और सात सिक्षावृति लेकर श्रावक बनाथा सो कितनेही दिनके बाद अनुवृतिदी छोडकर मिथ्यात में भ्रमण कर संन्यासपणा लिया फिर रात्रि के समय मनमें बिचारा और सवेरे सर्व संन्यासियों से पूछ कर काष्टकी मोहपत्ती बांधकर उत्तर दिशा को गया और रात्रि के समय देवताने दुष्ट प्रविर्जा अर्थात् खोटी प्रवृत्ति कही फिर समझाकर मोहपत्ती दूर कराय कर श्रावक का वृत धराय कर देवता पीछा गया सो पाठ निरीयावल का सूत्र में दिखाते हैं परंतु जब मोहपत्ती बांध कर उत्तर दिशा में गया वहांमे दिखाते है ग्रंथ बढजाने के भयसे पहिले का पाठ नहीं लिखते हैं तुम्हारे कल्याण होने के वास्ते हमतो तुम्हारे को बहुत समझाते हैं। पाठः—

कल्लंजावजलंते बहवेतावसेय दिट्ठाभट्ठयपुव्वसंगाति एय तंचेवजाव कट्ठमुद्दाए मुहबांधेतिश्त्ता अयमेयारुवे अभिगहं अभिगिगहाति जत्थेवअम्हंजलांसिवा एवंथलंसिवा एवंदुग्गं निण्हंपठवयंविसमंसिवा झगझाएवा दारिएवा पखलिज्जएवा पविडिज्जवा नोखलुमेखप्पति पच्चुट्ठितएतिकट्टु अयमेयारुवे अभिगहं अभिगिण्हति उत्तरायदिसाय उत्तराभिमुहपत्थाणं

तएणंसेसोमिलेमाहणरिसी पुव्वावरत्तकालसमयंसि जेणेव असोगवरपायवे तेणेवउवागए असोगवरपायवस्स अहेकढिणं संकाइयंठवेति२ वेदिंवेढए२ उवलेवणंसमज्जणंकरेति २ दब्भ कलसहत्थगए जेणेवगंगामहानइ जहांसीवोजावगंगाउमहा नइ पच्चुत्तरांति जेणेवअसोगवरपायवे तेणेवउवागए दब्भे हियकूसेहिय वालुयाए वेतिंराति वेदिंरातित्ता सरगंकरेति२जाव वलिंवंतिस्सदोविंकरेति२ कट्ठमुद्दाए मुहबंधति तुसणीयसंचिट्ठइ तत्तेणंतस्ससोमिलस्स माहणरिसीस्स पुव्वरत्तावरतकालसम यंति एगेदेवेअंतिए पाउभूए तत्तेणंतससोमिलरीसिस्स एवं वयासी हंभोसोमिलमाहणपव्वइया दुपव्वइतए तत्तेणंसोमिले तस्सदेवस्सदोच्चंपितच्चंपि एयमहंनोअढायतीनोपरि जाणाति जावतुसिणीएसंचीट्ठांति तत्तेणंसेदेवसोमिलेणं माहणरीसीणा आणाढायमाणेजमाणे जामेवदिसिंभाओभूए तामेवादिसंपाडि गए १ तत्तेणंसोमिलेकल्लंजावजलंते वागलवथ्थ नियथ्थेकाढि णसंकाइयं गहियगहिता हथ्थे भंडोव करणे कट्ठमुद्दाएमुहबंधति२ उत्तराभिमूहेसंपथ्थिति तत्तेणंसेसोमिलेवितीयादिवसंसि पुव्वा वरण्हकालसमयंसि जेणेवसत्तिवन्न अहेकढिणसंकाइयं ठवेति२ वेदिंवेढेति जहाअसोगवरपायवे जावअग्गिहुणांति कट्ठमुद्दाए मुहबंधितिर२तुसणिएसंचिट्ठइ२त्ता तत्तेणंतस्ससोमिलस्स पुव्वर त्ताविरतकाले एगेदेव अंतिलिखपडिवन्ने जहाअसोगवरपायवे जावपाडिगये२ततेणंसोमिलेकल्लंजावजलंते वागलवथ्थानियथ्थे कढिणसंकाइयं गण्हंति२कट्ठमुद्दाए मुहबंधति२त्ता उत्तरादिसाए उत्तराभिमुहेसंपथ्थिते ततेणंसोमिले ततियदिवसंसि पुव्वावर णकालसमयंसि जेणेवअसोगवरपायवे तेणेवउवागच्छइ२त्ता अहे काढिणसंकाइयंठवेति वेदिंवेढइ जावगंगामहानइय पच्चुत्तरांति त्ता२ जेणेवअसोगवरपायवे तेणेवउवागच्छइ२त्ता वेदिंरयतित्ता जावकट्ठमुद्दाए मुहबंधति२त्ता तुसाणिएसांचिट्ठांति२त्ता ॥ ततेणं सोमिलस्सपुव्वरत्ता वरत्तकाले एगेदेवेअंततंचेवभणांति जावप

डिगए३ततेणंसोमिलेजावजलंते वागलवथ्थकिढिण संकाइयं जाव कट्टमुद्दाए मुहबंधइ उत्तराएपथ्थिए ततेणंसोमिलेचउथे दिवसे पव्वावरएहकालसमयंसि जेणवबडपायवे२तेणेवउवाग छइ२ त्ता वडपायवस्सअहे काढिणसंकाइयंठवेति वेदिवेढति उवलेवणंसमज्जणंकरोति जावकट्टमुद्दाए मुहबंधातिरत्ता तुसी-णीयसंचिट्ठइ ततेणंसेस मिलस्स पुव्वरत्तावरतकाले एगेदेवे अंतियंपाओभुएतंचेवभणंति जावपाडिगए४ततेणंसोमिलेजाव जलंतेवागलवथ्थनियथ्ये कढिणसंकाइयं जावकट्टमुद्दाए मुह बंधइरत्ता उत्तराएदिसाए उत्तराभीमुहेसंपाथ्थितिरत्ता ततेणंसो मिले पंचमदिवसंसि पुव्वावरएहकालसमयंसि जेणेवउवरपाय वस्स अहेकाठिणसंकाइयं ठवेति वेदिवेढेति कट्टमुद्दाएमुहबंधति जावतुसीणीए चिट्ठंति ततेणंतस्ससोमिलस्समाहणस्स पुव्वर त्तावरत्तकालसमयंसि एगेदेवेजावएवंवयासी ॥ हंभोसोमिला पव्वइए दुपव्वइएतेजहापढमंभणतितहेवतुसीणीए संचिट्ठंति देवोदोच्चंपि तिच्चंपिसोमिलापव्वइया दुपवइया ततेणंतस्स सोमिलस्स तेणंदेवेणं दोच्चंपितिच्चंपि एवंवुत्तासमाणे तेदेवे एवंवयासी कहणंदेवाणुपिया ममंदुव्वइया ततेणंसेदवे सोमिलं माहणं एवंवयासि एवंखलुदेवाणुपीया तुमेयासस्स माहोपुरु सादाणियस्स अंतियंपंचाणुबइते सत्तासिखावए दुवालस्सविह स्स सावगधम्मे पडिवन्ने ततेणंतस्स अन्नयाकयाइ असाहूदं सणेणं जावपडिवज्जइ पुव्वरत्तंकुटुंबजावपुव्वचिंततो देवो उ च्चारेति जावजेणेवअसोगवरपायवे तेणेवउवागए कठिणसं काइयं जावतुसिणिएचिट्ठंति ततेणंपुव्वरत्ता वरत्तकालेतवअं तियंपाउभ्भावामिहंभोसोमिला पव्वइया दुपव्वइते तहेच्चेव देवाणियभणंति जावपंचमदिवसंसि पुव्वावरएहकालसमयंसि जेणेवउवरपायवे तेणेवउवागते कट्टिणसंकायंठवेति जाववेदिं वेदेति उवलेवणंसमज्जणंकरोतिरत्ता कट्टमुद्दाएमुहबंधइबंधित्ता तुसीणीयसंचिठंतितं एवंखलुदेवाणुपीया तवदुपावियं ततेणंदेवे

सोमिल एवंवयासि जइणं तुम्हं देवाणुप्पिया इयाणिपुव्वपडि वन्नाइ पंचअणुव्वया सत्तसिखावयाइं दुवालसविहं गिहंधम्मं सयमेव उवसंपाज्जित्ताणं विहरंतितोणंतुम्हंइंदाणि सुपव्वइयं भविज्जा ॥ ततेणंसेसोमिलेमाहणारिसि तेणंदेवेणं अंतियंएय मठ्ठं सुच्चापुव्वेपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं जावसयमेव उवसंप ज्जिताणं विहरंति ततेणंसेदेवेसुपव्वइयं पडिपन्नेजाणित्ता तंदेवेसोमिलंवंदइनमंसति जामेवदिसंपाओभूया तामेवदिसंप डिगया ततेणंसोमिलं माहणारिसि तेणंदेवेणं एवंवुत्तासमाणे पुव्विपडिवन्नाइ पंचअणुवयाइ सयमेवउवसंपज्जित्ताणंविह रंति ततेणंसोमिलेवहुहिं चउथछठ्ठमजावमासद्धमासखमणे हिंविचतेहिं तवोवाहाणेहिंविचतेहिंअप्पाणंभावेमाणे वहूहिंवा साहिं समणोवासगपरियाइं अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताण भूसतिश्तीसंभत्ताइ अणसणाएछेदित्ता तस्सट्ठाणस्स अणालो इए अपडिकंतेवीराहिथे सम्मतेकालमासेकालेंकिच्चासुक्कपडिं सए विमाणे उववाएसभाए देवसयणिज्जंसिजावतो उगाह णए सुक्कमहागाहत्ताए उववणेततेणंसेसुक्कमहाग्गहे अहूणोव वन्नेसमाणे जावभासामणपज्जातिए एवंखलुगोयमा सुक्केणंम हाग्गहेणंसादिव्वाजावअभिसमणागता एगंपलिओवमंठिइसु क्कणंभंतेमहाग्गहे ताउ देवलोगाउआउखएणंकएणंकहिं गए गोयमा महाविदेहवासेसिभंहिति एवंखलुजंबुसमणेणं निखे वेउ ॥ नरयिावलका सूत्र मध्ये अध्येन३जोइ लेज्जा ॥

अर्थः— प्रभात समय जिस समय में सूर्य उदय हुवे के बाद बहुत तापसी अर्थात् संन्यासी लोगों की अनुमति अर्थात् आज्ञा लीनी बौटा मत के संन्यासी थे उनकी और अपनी निश्चय करके काष्ठकी मुंहपत्ती से अपना मुख बांधकर इस रीति का अवग्रह लेता हुवा कि जल के बिषे थल के बिषे अथवा पहाड़ का चढ़ना अथवा पहाड़ से नीचे उतरणा अथवा दिसन अर्थात् खाड़ा आदि अथवा गुफा आदि के बिषे फिसलना अर्थात् डिगमगाकर पगादिक से

पड़जाऊं तो निश्चय करके मेरे को उठना न कल्पे अर्थात् फिर वहां से नहीं उठूं ऐसा अपने मनको दृढ़ करके अवग्रह लेकरके उत्तर दिशा के सन्मुख चला फिर चलता २ सोमल महर्षि सायंकाल के वक्त जिस जगह अशोक वृक्ष के नीचे अर्थात् हेटे आय करके काष्ठ की कुराड़ी थापी फिर वेदिका चार पादु करके गोबर से लीपी फिर बुआरी फेर करके दाभ (दर्भा) और कलश हाथ मे लेकर के जिस जगह गंगा मोटी नदी है तहां जाय करके प्रवेश किया और अपना सर्वकृत्य करके पीछा जिस जगह अशोक वृक्ष था उस जगह आता हुआ फिर उस जगह वेदी बांधी उस वेदी में शक्कर आदि सामग्री से होम किया और देव पूजन करके बाद काष्ठ की मुद्रा अर्थात् मुहपत्ती से मुख को बांध के चुप होकर बैठा रहा तिसके बाद सोमल सन्यासी के समीप अर्ध रात्रि के समय एक देवता आय कर प्रगट हुवा और सोमल सन्यासी से कहने लगा कि भो सोमल ब्राह्मण तू प्रवृज्या करके दुष्ट प्रवृज्या खोटी है इस रीति से सोमल ब्राह्मणने उस देवता का दो तीन वार बचन सुना और उस देवता के बचन को अनजाना और चुप होकर बैठा रहा कुछ जवाब न दिया तब वो देवता सोमल सन्यासी के उत्तर न आने से जिस तरफ़ से आया था उसी तरफको चलागया तिसके बाद सोमल प्रभात सूर्य्य उगने के बाद बलकल का वस्त्र पहर काठकी कुराडी लेके और हाथमें गड़ा आदि उपगरण लेकर काष्टकी मुद्रा से मुख बांधके उत्तर दिशा मुख करके चलता हुवा जिसके बाद सोमल ब्राह्मण महर्षि दूसरे दिन संध्या काल के समय जिस जगह से पुपानी वृक्ष के नीचे ठरहता हुवा और उपगरन आदि रख कर जिस रीतिसे पहिले दिन अशोकवृक्ष के नीचे अग्निहोत्रादि क्रिया करके काष्टमुद्रा से मुख बांधके चुप होकर बैठता हुवा तिस के बाद सोमल महर्षि आधीरात के समय एक देवता आकाश के विषे खड़ा होके जिस रीतिसे अशोकवृक्ष के नीचे कहा था उसी रीतिसे दो तीन वार कहा कि हे सोमल तेरी प्रवृज्या खोटी है

तोभी सोमल ने उसके बचन को न सुना तब देवता फिर पीछा चला गया तिसके बाद सोमल प्रभात समय सूर्य उगे के बाद बल्कल का वस्त्र पहन के काष्ट कुराडा आदि उपगरनों को हाथ में ले और काष्ठकी मुद्रा से मुख को बांधके उत्तर दिशाके सन्मुख चला तिसके बाद सोमल ब्राह्मण तीजे दिन संध्या के विषे अशोक वृक्ष के नीचे आयकर ठहरा और जो क्रिया बेदी आदिक करके गंगा में स्नान किया फिर पहिले की तरह सर्व क्रिया करके काष्ट मुद्रा से मुख को बांध कर चुप होकर बैठा तिसके बाद सोमल सन्यासी के पासमें आधीरात के विषे एक देवता आकाश में खड़ा रहा पीछे गया तिसके बाद सोमल प्रभातमें जब सूर्य उगा तिसके बाद बल्कल का वस्त्र पहर कर और भंड उपगरनादि लेकर काष्ट की मुद्रा सूं मुख बांधकर उत्तर दिशा को चला तिसके बाद सोमलऋषि चौथेदिन संध्याकालके समय जिस जगह बड़ का वृक्ष था उस जगह आकर ठहरा और उपगरनादि रख कर जो क्रिया पूर्व करीथी सो क्रिया कर काष्टकी मुहपत्ती से मुख को बांधकर के चुपचाप होकर बैठगया तिसके बाद आधी रातके समय एक देवता पास आयकर प्रगटहुवा और पूर्वकी तरह कहने लगा कि भो सोमल तेरी खोटी प्रवृज्या है ऐसा कहकर पीछा चलागया तिसके बाद सोमल जब सूर्य उदयहुवा के बाद बल्कलका वस्त्र पहरकर सर्व उपगरन लेकर काष्टकी मुद्रासे मुख बांधकर उत्तर दिशाके सन्मुख चला तिसके बाद सोमल सन्यासी पाचवें दिन संध्या काल के समय उंबर नाम दरखत उस जगह आयकर उस उंबर दरख्त के नीचे ठहरा और बेदी आदिक सर्व क्रिया करके बाद काष्टकी मुद्रासे मुख बांध चुप होकर के रहा तिसके बाद उस सोमल सन्यासी के पासमें पहेली आधीरात बीतगई और पिछली आधीरात के समय एक देवता प्रगट हुवा और कहने लगा कि अरे सोमल तेरी प्रवृज्या खोटीहै इसी रीतिसे कहा तोभी चुप होरहा तिसके बाद उस देवता ने दो तीन वार कहा कि अरे सोमल तेरी प्रवृज्या दुष्ट अर्थात्

खोटीहै इसरीति से कई दफै सुननेसे उस देवतासे सोमल कहने लगा कि भो देवतोंके प्यारे किस वास्ते मेरी दुष्ट प्रवृज्या है तब देवता सोमलऋषि से कहने लगा कि निश्चय हे देवताके प्यारे तुमने श्री पारश्वनाथ जी अरिहंतदेव पुरुषोंमें उत्तम पुरुषहैं तिसके पास पांच अनुवृत्ति सात सिक्षा वृत्ति दोनो बारह प्रकारका श्रावक धर्म अंगिकार किया था तिसके बाद तैंने एकदा समय में असाधु के दर्शन कर के एक समय कुटुंबका बिचार किया और बाग लगाया तथा मूंड मुंडाया अथवा मुख बांधा इत्यादिक पिछली सर्व बातें कहीं और अशोक वृक्षके नीचे ठहरा तावत् मौन करके ठहरा तिसके बाद पहली आधीरात के समय तेरे पास मैं आया और प्रगट होकर के और सोमल तेरी प्रवृज्या दुष्ट अर्थात् खोटी है ऐसा निश्चय देवता अपना बचन कहै यावत् पांचवें दिन सायंकाल के समय उंबर नाम दरखत के नीचे यावत् काष्ट मुद्रासे मुखपर बांधकर के तू मौन में रहा तिस कारणसे ये निश्चय हे देवता के प्यारे दुष्ट प्रवृज्याहै ऐसा देवता सोमल से कहने लगा जो तेरे को हे देवताके प्यारे अभी पूर्व में जैसे वृत अंगीकार कराथा तैसेही पांच अनुवृत और सात शिक्षावृत दोनों बारह प्रकारका श्रावकका अंगिकार करके जो तू बिचरेतो तेरी फिरकर के भली प्रवृज्या होय ऐसा सुनके बाद उस सोमल ब्राह्मण ऋषिने उस देवताके समीप अर्थ सुनके पहिलीतरह अंगीकार किये क्या पांच अनुवृत सात शिक्षा वृत आपही अंगिकार कर बिचरने लगा तिसके बाद उस देवताने भली प्रवृज्या अर्थात् अच्छी जान करके उस देवताने सोमल को वंदना नमस्कार करके जिस दिशा से आया था उसी दिशा पीछा गया तिसके बाद उस सोमल ब्राह्मण अर्थात् ऋषिने उस देवता के कहने से पिछली तरह से अंगिकार किये तिसके बाद वो सोमल नाम ब्राह्मण बहुत वृत बेला तेला यावत् मास अथवा अर्ध मास आदि नाना प्रकार की तपस्या करता हुवा अपनी आत्मा को भावतो हुवा इस रीति से बिचरता हुवा साधु का उपासक अर्थात् सेवक हुवा श्रवनोपासक

अर्थात् साधु के व्रत समान श्रावक का व्रत पालता हुवा अर्धमास की संलेहणा सहित अपनी आत्मा बश करके दीक्षा पालता प्रमादादिक अन्न आलोइ अर्थात् पहिले अयोग किया था तिसको गुरु के पास आलोया नहीं अर्थात् पाप से निवृत्ति नहीं काल करके शुक्रावंत शुक्रविमान के उपायान सभामें देवता संबंधी संध्या के विषे यावत् उंगलनो असंख्यातमो भाग शुक्र नाम देवता मोटा ग्रहपणें उपजा तिसके बाद शुक्र नाम मोटा ग्रह तत्काल निश्चय उपजने पर्याप्ता एक समय उपजे हैं गोतम इसलिये देवता पांच पजतीया कहा यह निश्चय. हे गोतम शुक्र नाम ग्रह ते देवता यावत् सन्मुख हुवा एक पल्योपम की स्थिति जिसकी उस वक्तश्री गोतम स्वामी पूछने लगे कि हे पूज्य यह मोटा ग्रह देवलोक से आयु क्षयकर के कहां जायगा इस रीतिसे हे जंबू जिस रीति से श्रवण भगवान् कहा तिस रीति से मैं तेरेको कहता हुआ अब इस जगह भी सूत्र में अनुमति अर्थात् बीटामत वाले का मुख बंधन कहा परंतु किसी सूत्र में जैन का साधु वा श्रावक मुख बांधके बिचरे ऐसा न कहा इसलिये हे भव्यप्राणियो! इस मोह निद्रा को छोड़ कर बुद्धि का बिचार करो कुमति कदाग्रह को परिहरो अन्य लिंग को क्यों अंगिकार करो मुख बांधनेही से तुम्हारा प्रेम है तो जैनी नाम क्यों धरो क्योंकि जिस मत में जो आचारना होगी उस आचारनाकूं तो आज्ञा देंगे परंतु अपने मत वाला दूसरे मत की आचारना को न अंगीकार करेगा और उस दूसरे की आचारना की आज्ञा कदापि न देगा किन्तु खोटी कह कर निरादर करेगा इसलिये जो जैन मत में मुख बांधना होता तो वो तापसी अर्थात् संन्यासी लोग आज्ञा न देते और सोमल संन्यासी को उलटा बहका-देते इसलिये उन संन्यासियों का मुख बांधना अच्छा था इसलिये सोमल संन्यासी को मुख बांधने की आज्ञा दी और वो सोमल संन्यासी मुख बांधकर उत्तर दिशा को चला तब उसका मुख बांधना खोटा जान कर बारह व्रत अंगिकार कराया उसका मुख बांधना

छुड़ाया हमने तुमको यह पाठ सूत्रका दिखाया पाया ना जैनधर्म जब ढुंढिया कहलाया आपतो डूबा कितनेही जैनी जातके को डुबाया धारा कुलिंग जैन धर्म क्यों लजाया तुम्हारे समझावनेके लिये जैन लिंग ग्रंथको बनाया हमारी करुणा रूपी तीरने तुम्हारे पाखंडको उड़ाया इस बातको सुनकर मुंहपत्ती बांधने वाला कहने लगा कि सोमल संन्यासी ने काष्टकी मोहपत्ती बांधी इसलिये उसको खोटी प्रवृज्या कही सो हमतो काष्टकी मोहपत्ती नहीं बांधते किन्तु वस्त्र की मुंहपत्ति बांधतेहैं इसलिये सोमल संन्यासीका दृष्टांत देकर हमको कुलिंगी बतलाते हो तुम हमकूं कहने में कभी नहीं शरमातेहो हमकूं बुरा बतातेहो नाहक झगड़ा मचातेहो अपनी विद्वत्तामें नहीं समातेहो इसलिये बुद्धिका विचार कर बोलो हम कहते हैं मुंहपत्ती है इसको भी बुद्धिमें तोलो उत्तर भोदेवानु प्रिय हम शास्त्र अनुसार विचारकर कहतेहैं कि उस सोमल संन्यासी के काष्टकी मोहपत्ती बारबार मुंहसे बांधी बांधीने ऐसा पाठ कह्या परन्तु तुम्हारी वस्त्रकी मोहपत्ती के वास्ते डोरा डालकर बांधी वा खोली ऐसा पाठ सूत्रमें कहीं नहीं आया इसलिये हमने तुमको जिनधर्म के बाहर अन्य लिंग बताया सो हमकूं ऐसा पाठ कहीं बतलाइये कान मेंसे डोराखोल कर मोहपत्ती पड़ी लेहीरत्ता कहतां मुंहपत्ती की पडि लहेणा करी क्योंकि श्रीउत्तरा ध्येनजी अध्येन २६ में गाथा२३ देखो मूलको

मुहपोत्तीयंपडि लेहिता पडिलेहिज्जा गोछगं गोछगं लयं गुलिउ वथ्थाइ पडिलेहइ

अर्थः— मुख वस्त्रका की पच्चीस पडिलेहण कर पडिलेहणा करके बाद गुच्छाकी पडिलेहणा करे सो उंगली करके प्रतिलेखे पीछे झोली पटला आदि वस्त्रकी पडिलेहणा करे इस सूत्र में तथा अर्थमें मुंहपत्ती की पडिलेहणा तो कही परंतु पडिलेहणा करके बाद आठ तह करके तागा लगाय पीछे गुर्दामें बांधना अर्थात् कानमें

बांधना वा कपालमें बांधना इत्यादि अर्थात् किसीमें न आया तो फिर साधु को मुख बांधकर विचरना वा ग्रहस्थियों को मुख बांधना और इस मुख बांधनेकी थापना करना जिन आज्ञासे विरुद्धहै इसलिये इस अज्ञानको छंडो कुमतको क्यों मंडो जैन मतको क्यों भंडो हम तुमको देतेहैं प्रमाण मुंहपत्ती बांधना येही तुम्हारा अज्ञान आत्माका हित करना होयतो कहना हमारा मान समझ ले गुरूज्ञान जिसमें होवे तेरा कल्याण इतना कहनेसे फिर मुंहपत्ती बांधने वाले कहते हैं कि जिस वक्त में भरत राजा को आरसी महल में केवलज्ञान उत्पन्न हुवा था उस वक्त देवताने ओघा मोहपत्ती दीनी थी उस वक्त मोहपत्ती बांधकर रानियों के महल में होकर निकसा उस वक्त में मुंह की मोहपत्ती देख कर अनार्य देश की राणी हंसने लगी कि आज राजा क्या स्वांग लाया है और आर्यदेश की राणी रोने लगी कि हाय राजातो साधु होगया इसलिये एकांत मत तानो कुछ हमारी भी बात मानो उत्तर भोदेवानु प्रिय! ये तेरा मनोकल्पित गाल बजाना है क्योंकि देखो जंबूद्वीप पन्नोती में भरत के अलावेसे पाठ दिखाते हैं तुम्हारे कल्याण के वास्ते बारंबार समझाते हैं तुम्हारा मिथ्यात्व गमाते हैं तुम अपने आपही नाहक्क क्यों उलझाते हो॥

पाठः—तएणंतस्सभरहस्सरणो सुभेणपरिणामेणं पसत्थेहिंअज्झवसाणेहिं लेसाहिंविसुज्झमाणाहिं इहापोहमगण गवेसण करेमाणस्स तयावरणिज्जाणकम्माणंखएणं कम्मरयविकरणं करिं अप्पुव्वकरणंपविठस्स अणंतेअणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणकसणे पडिपुन्ने केवलवरणाणदंसणेसमुपन्ने तएणंसेभरहे केवली सयमेव अभरणाअलंकारं मुययइ२त्ता सयमेवपंचमुट्ठियंलोयंकरीतिर२त्ता आदंसघराउ पडिनिखमइ२त्ता अंतेउरमज्झंमज्झेणं निगच्छइ२त्ता दससहिंरायवरसहसेहि सद्धिंसंपरिवुडे विणीयंरायहाणि मझंमज्झेणं निगच्छइ२त्ता मज्झदेसेसुहंसुहेणं विहरइ२त्ता॥

अर्थः—तिसके बाद भरत राजाने शुभ शरीर का असारपना जानकर शुद्ध रूप शुद्धप्रणाम करके भले अदब साय से लेश्या उत्तर २ परिणाम में भी शुद्ध मन करके निर्णय शरीर यहां अपाय करके गवेसना करता हुआ केवलज्ञान केवल दरशण आभरन भूत चार गातीयां कर्मको क्षय करके जीव प्रदेसुं सर्वघाती पुद्गल टाल करके आठ कर्म रूपी रजको विकरण अर्थात् क्षय करण ऐसा अनादि काल संसार के विषे पूर्व कदापि परिणाम नहीं आया इस अपूर्व करण शुक्ल ध्यान का दुसरापाया ध्यावता हुवा ऐसा अनुत्तर सर्व ज्ञान उत्तकृष्टा नीर व्याघात अंतर करके रहित समग्रपरमें प्रति पूर्ण सर्व आत्मक केवल नाम कहता प्रधान विशेष करके देखना सोतो ज्ञान और सामान प्रकार करके देखना सो दर्शन ऐसा केवल ज्ञान केवल दर्शन उतपन्न हुवा तिसके बाद भरत केवलीने अपना आभरण अर्थात् मुकुट कुंडलहारादिक अलंकार उतारता हुवा और अपना आपही पंच मुष्टी लोच करके आरसी अर्थात् काचका महल से निकलके अन्तःपुर के मध्यभाग अर्थात् रानियों के बीच में होके निकला फेर १०००० दस हजार मोटे राजाके संग परिवार सहित वनीता राजधानी के मध्यभाग होकरके निकला फिर मध्यदेश के विषे सुख पर्वक विचरते हुवे इस जगह सूत्र के पाठ वा अर्थ में मुंह बांधने का नाम भी नहीं इसलिये शास्त्रों में कहा है कि जैनी को प्रथम बिचार करके बोलना योग्य है अधिक ओछा बोलना योग्य नहीं जैनी नाम धरावे और मनोकल्पित बात करै जैनी नहीं वो फेनी है इसलिये तुमसे हमारा यही कहना है कि कुलिंग कूं मिटावो सुलिंग को धारण करो नहीं तो मोहपत्ती में डोरे का हाल बतलाइये क्यों नाहक झगडा मचाइये नाहक मिथ्यानुमति क्यों फैलाई है इस डोरे के पूछने से इन लोगों को उत्तर तो न बना परंतु अपनी धींगामस्ती करके कहने लगे कि आप मोहपत्ती के डोरा की बार बार पूछते हो परंतु आपभी तो बतलाइये कि ओघा के ऊपर डोरा किस जगह है सो डोरा तो ओघा में तुमभी बांधते

हो सो औरों के गुण कूं न देखना केवल मिथ्यात्व करना अच्छा नहीं उत्तर भोदेवानु प्रिय! हमारी मिथ्यातर्क नहीं है छोड़ अभिमान समझ गुरुज्ञान सूत्र का तुझे देते हैं प्रमाण श्रीनसीथ सूत्र उद्देशा ५ में प्रश्न ७३ का में देखो इस प्रमाण को परखो अपनी मनोकल्पित को ही मत ठेको ॥

पाठः—जेभिखूरयहरणस्स परंती ऐहंबंधणंदेइ देयंतं वासातिज्जइ ॥

अर्थः—जो भिक्षुककहतां साधु रजो हरण को तीन बंधन से उपरांत बंधन बांधे अथवा बांधता को भला जाने उसकूं लघुमासिक प्रायश्चित्त आवे इस पाठ के अनुसार रजोहरण अर्थात् ओघाकूं डोरा सिद्ध होगया परंतु मुंहपत्ती का डोरा कितने तागा का था कितना लंबा गेरना चाहिये इसलिये मालुम होता है कि जैन का साधु कूं मुख बांधना नहीं तो सूत्रमें डोर की मर्यादाही क्योंकर लिखे इसलिये हे भोले भाइयो इस कदाग्रह को छोडो और बुद्धि का बिचार करो मोहपत्ती मुख बांधने से मुख मोड़ो तब कोई मुख बांधने वाला कहने लगा कि ओघा के डोरा का आपने प्रमाण दिया परंतु चद्दर में डोरा किस जगह कह्या सो बतलाइये नाहक झगड़ा मत मचाइये हमारी पकड़ी बातको क्यों गमाइये हमने भी मुख बांधनेकी हृदय में हठ जमाइये उत्तर भोदेवानु प्रिय ! ये मिथ्या तेरी तर्क हम निकासते हैं तेरे हृदय का फरक जिन आज्ञा न मानेगा तो मिलेगा तेरेको नरक। सूत्र नसीथ उद्देशा १प्रश्न ३२में लिखा है सोही दिखाते हैं

जेभीखुअप्पणोएगस्स अठाएसुइज्जाइत्ता अणमणस्स अणुपदेइ अणुपदेइतंवासाइज्जइ २८ जेभीखुपडिहारिय सुइ जाइत्ता वत्थसीवीसामी पायंसीवत्ती सीठवेंतंवा साइज्जइ॥

अर्थः—जो कोई साधू साध्वी अपने वास्ते अथवा दूसरे कोई साधू के वास्ते सूई मांगकर लावे अपने वा दूसरे के वास्ते गृह-

स्थी से कहकर लावे उसके उपरान्त अन्य साधु साध्वी को आप दे अथवा कोई दूसरा ऊपर लिखी रीति से विपरीत अर्थात कहे कि उपरान्त अन्य को देते हुएको भला जाने इस उद्देशा के २८वें प्रश्न में लघुप्रायाश्चित आवे फिर भी जो कोई साधु साध्वी पढिहारी (सूई) लावे वस्त्र सीने के वास्ते गृहस्थी से कहे कि में वस्त्र सीऊंगा ऐसा कहकर लावे फिर उस सूई से वस्त्र सीने के बाद अथवा पाहिले पात्र पर मुख सीवे अथवा सीवते को भला जाने तो लघुप्रायाश्चित आवे गुरू मुख से वा सूत्र के अभिप्राय से मालूम होता है कि चद्दर सीवने वास्ते सूई मांगे और चोलपट्टा सीवे वा चोलपट्टा के वास्ते मांगे और चद्दर सीवे तो प्रायश्चित आवे क्योंकि सर्वज्ञ की आज्ञा यही है कि जिस काम के वास्ते गृहस्थी से चीज मांग लावे उसी काम को करे उससे वैसाही करे तो उसको झूंट लागे इसी वास्ते प्रायश्चित कहा है इसलिये हे भोले भाईयो! जब वस्त्र पात्र सीवने को कहा तो डोरा आप से आपही आगया तुम्हारा प्रश्न चादर में डोरे का था सो हो गया इसलिये हे भोले भाइयो! हट को छोड़कर जिन आज्ञा को साधो अष्ट पहर मुंहपत्ती मुख पर मत बांधो इसके ऊपर मुख बांधने वाला फिर भी अपनी तर्क को उठाता है ज़रा भी नहीं शरमाता है अपनी बात गुमाता है और कहता है कि जब अष्ट पहर न बांधे तो इसको मुंह पत्ती क्यों कहा है इसलिये हम कहते हैं कि मुंहपत्ती कहनेमे अष्ट पहर मुंह पर ही बांधना चाहिये उत्तर भो देवानुप्रिय शास्त्र के विदून किस बुद्धि रूप खाड में सुशब्दार्थ निकाला मिथ्यात्व रूप भंग के नशे में होरहा मतवाला अरे कुछ तो बुद्धि का विचार कर मुंहपत्ती कहने से अष्ट पहर मुख पर बांधना अंगिकार करेगा तो रजोहरण कहने से अष्ट पहर रज अर्थात धूला कचरा ही अष्ट पहर निकालना चाहिये गली गुचीमें मकानोंमें मेहतरों की तरह हरदम कचरे को हरना चाहिये बैल जैसा लंबा पूंछड़ा बगल में

लेकर चलना न चाहिये इसलिये बुद्धि का विचार कर बचनको निकालो जिन आज्ञा को पालो तब मुख बांधनेवाले कहने लगे कि रजोहरण से जब रज दूर करने का काम पड़ता है जब रज दूर कर लेते हैं नहीं काम पड़े तो पास में रक्खा रहता है इसलिये अष्ट प्रहर निकालने का कुछ काम नहीं उत्तर भो देवानुप्रिय यहां भी अकल का विचार कर बुद्धि के बोझा से मत दब और अकल के दुश्मन जैसे रजोहरण से काम पड़े जब रजको दूर करता है वैसेही मुख से बोलने का काम पड़े जबही मुहपत्ती से मुख को आच्छादन करना अंगिकार करो अष्ट प्रहर का मुख बांधना परिहरो नाहक क्यों कदाग्रह करो जिन आज्ञा को सिरपर धरो जिससे तुम्हारा कल्याण होय इसपर भी फिर मुहपत्ती बांधने वाला कहता है कि मुख बांधना क्या सहज है क्योंकि मुख बांधने से जीव भीतर से व्याकुल होता है उस व्याकुलता से कष्ट होता है उस कष्ट को सहना बहुत मुश्किल है इसलिये हम मुख बांधते हैं परिश्रम को सहकर परीसा को सहेते हैं आप लोग खुले मुख रहते हो परीसा नहीं सहते हो क्यों बार २ हमसे कहते हो हम तुम्हारी कदापि न मानेंगे उत्तर भो देवानुप्रिय तुम हमारी न मानो सो तो तुम्हारी खुशी परंतु जो तुम जैनी नाम धराय कर जैन के साधु बनतेहो और जातिकुलके जैनियों को बहकाते हो जैन का उढाह कराते हो इसलिये हम तुमको बार बार कहते हैं कि हे भोले भाई कष्ट उठानेही से मुहपत्ती बांधते हो तो वस्त्र की मुहपत्ती से काष्ट की मुहपत्ती मे कष्ट अधिक होगा क्योंकि कपड़ा नरम होताहै और काष्ठ कठिन होता है इसलिये कष्ट का सहना ये तुम्हारा कहना अज्ञान रूप भंग का नशा है जो कष्ट उठानेसेही धर्म होता तो मुरादेवी भरतादि अनेक सत पुरुष मोक्षमें गये और उन्होंने कुछ कष्ट न उठाया जिन आज्ञाको आराध कर केवल ज्ञान पाया दूसरा और भी सुनो कि मुंह की बाफ अर्थात हवा से वायुकायकी हिंसा होती है तो देखो मुंह बांधने से नाक का स्वांस अर्थात् हवा

विशेष निकलैगी तो उससे वायुकायकी हिंसा होगी क्योंकि देखो जिस जगह दो मार्ग निकलने के हैं उस जगह निकलने में कम जोर पड़ता है जब एक को बंद करे तब एक के निकलने में विशेष जोर पड़ता है इस दृष्टांत से जानो कदाग्रह को मत तानो जो तुम कहो कि हम परीसा सहते हैं यह कहनाभी तुमारा शास्त्रों का अनजानपणा दर्शाता है क्योंकि देखो उत्तराध्येनजी के दूसरा अर्थात् परीसा अध्येन में बाइस परीसा के नाम कहे जिससे मेल परीसा त्रण परीसा आदि बाइस नाम कहे परंतु मुख बांधने में जी अमूजे ऐसा तेइसमा परीसा तो न कह्या इसलिये तुमारे कहने मूजब अरिहंतदेव सर्वज्ञ भी न ठहरा इसलिये तुमने कुलिंग भेष को पहरा जभी तुम्हारा भूंडा दीखे चेहरा जैन शास्त्र में मुख बांधना न ठहरा क्योंकि देखो परंपरा से भी मुंहपत्ती बांधना नहीं दीखाता है सोइ दिखाते हैं कि श्रीमाहावीर स्वामी के पाठ श्रीसुधर्मा स्वामी बैठे और उनके परंपरामें अनेक आचार्य हुवे उनके नाम वा गुण से अनेक गच्छादि भेद हुवे उन गच्छों में भी अनेकगादी आदि भेद और कई तरह की परपना आदि में भेद होगया परंतु मुंह किसीने न बांधा दूसरा श्रीपारश्वनाथ के सन्तानी या श्रीकेशीकुमार पहली परंपरा को छोड़कर जैनमत के भेद मिटाने के वास्ते और भव्यजीवों के वास्ते वा कल्याण के वास्ते शासनपति श्रीमहावीर स्वामी की आचरना को अंगिकार किया और उनकी परंपरामें श्री रत्नप्रभसुरीजी हुवे जिन्होंने नये रजपूतों को उपदेश दे ओसवाल जातबनाइ ओर उसी ओसानगरी में श्रीमहावीर स्वामी के बिंब की प्रतिष्ठा कराई उनकी परंपरा में मौजूद है परंतु मुंह न बांधा रे भाइ लोकालहिया ने मूर्ति पूजन का निषेध किया परंतु मुख बांधने की राह उसने भी न चलाई बिना गुरु भोले भाइयों लोका ने लोका का उपदेश सुनलीनारे भाई लोका के कहने से गुरु बिना भेष परह जिन प्रतिमा की निंदा उठाई उसमें भी गादी आदिक कई भेद हुवे अष्टप्रहर मुंहपत्ती न लगाई कुछ दिन के बाद लवजीये

बजरंगजी के पास सूरत में दीक्षा लिराई उसने गुरुको वोसराय अष्टप्रहर मुखपर मुहपती बांधना चलाई इसलिये बीचमें कुलिंग चला दुखदाई भव्यजीवों के हृदय से जैन धर्म की श्रद्धा उठाई शुभ गती छुड़ाय कर दुर्गति की राह बताई हमारी करुणा ने भव्य जीवों के कल्याण हेतु सूत्र की शाखा दिखाई आतमा का हित करनेवाला भव्यजीव निर्णय करेगा तो होगा उसको सुखदाई मत पक्षी होगा तो अपनी क्योंकर करेगा भलाई इतना सुनकर कुमति मंडन सुमति खंडन मख बांधने वाले ढूंढिया कहते हैं कि भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण समय भस्म ग्रह २००० वर्ष का आया था सो भस्म ग्रह ऊत्तर के बाद लोंकानें दया धर्म प्रगट किया उत्तर भोदेवानुप्रिय ये तेरा कहना महा मृषाबाद अनंत संसार का हेतु है क्योंकि देखो जब कुछ दिन के बाद साधु साध्वी विच्छेद गये तो फिर तीर्थंकरके बिदुन साधु साध्वी की थापना जैन शास्त्र के अनुसार दूसरा कोई नहिं करसक्ता तब कोइ एक ढूंढिया ऐसा कहते हैं कि नहिं जी भस्म ग्रह के जोरसे उदे उदे साधु साध्वी की पुजा कम होती जायगी फिर भस्मग्रह के उतरने से साधु साध्वी की पुजा विशेष होगी इस हेतुसे लोंकामें दया धर्म चलाया और गुण को प्रतिबोध कर साधु बनाया लेकिन उपदेश दिया पण सिर न मुंडाया साधु मार्ग उसने चलाया उत्तर भोदेवानुप्रिय अभी तेरे को शास्त्रों का यथावत् खबर नहीं क्योंकि देख भस्म ग्रह उत्तरा और हाली तीनसो तेतीस ३३३ वर्ष का धुम्रकेतु नाम ग्रह है शासन के ऊपर आया जिसके जोरसे कुमति पंथ चलाया इस कुमति पंथ का शास्त्रों में लेख भी पाया सोही दिखातेहैं कि बंगचूलिया सूत्र में कहा है कि बावीस गोटीला पुरुषकाल करके संसार में नीच गति तथा बहुत नीच कुलों में परिभ्रमण करे बाद मनुष्य भव पावेंगे और बनियों के घरमें जन्म लेकर श्रावग कुल पायकर जुदीरजगह उपजेंगे और बालअवस्था छोड़ के बाद दुष्ट कुशील बुरा आचरण अंगिकार करके जिन आगम से विरुद्ध

उन्मार्ग चलावेंगे जिन प्रतिमा का पूजना उठावेंगे जती के भेष को भूंडा बतावेंगे बाज क्रिया कर लोगों में दुकान जमावेंगे हजारों स्त्री पुरुष को इकट्ठा कर मन कल्पित गाल बजाय कर लोगों को रिझावेंगे ढाल चौपाई ख्याल मांच की तरह दोहा छप्पय गीत वगैरह बखानों में सुनावेंगे सूत्र का नाम नहीं ऊपर लीखी चीजों को दो चार मिलाकर रागनी बनावेंगे लुगाइयों को भ्रमाय गृहस्थियों के माल खाय दुर्गतियों में जावेंगे इस रीतिसे उस बगचूलिया में मूल पाठ में लिखा है परंतु हमने ग्रंथ बढजाने के भय से न लिखा इसी सूत्र की साक्षी देकर जीतमल तेरह पथी ढूंढिया ने बाईस टोला के मध्य लिखा है और बाईस गोटीला पुरुषोंमे ही उतपत्ति बताई है सो उसकी बनाई हुई चरचा में देखो, दूसरे श्री आतमारामजी सम्वेगीजी का किया हुवा सम्यक्त्वसत्योद्धार ग्रंथ में देखो इसलिये हे भोले भाइयों लवजी और धर्मदास छीपा आदि बिना गुरु के भेष लेकर इस मुख बांधने का मत चलाया जैन मत को लजा ग्राम गलियों में कुत्तों को भुसाया यह कुलिंग तुम्हारे मन क्यों कर भाया इतनी सुनकर ढूंढिया फिर कहने लगा की अजी पासता आदि पर ग्रह के रखने वाले छकाय के कुटा करने वाले होने से हमने शुद्ध मार्ग चलाया उत्तर भोदेवानुप्रिय पासता आदिक का होना तो हमभी अंगिकार करते हैं और शास्त्रकार ने भी उनकूं बुरा कह्या सोही दिखाते हैं श्री उत्तराध्येनजी अध्येन २० गाथा ४३ ॥

पाठः—कुसीळ लिंगंइहधारइसाइ सीज्जयं जीवीयबुह इत्ता असंजय संजयलप्पमाणोविणिधायमागच्छइसोचिरंपी ॥

अर्थः—पासता का लिंग लोगों के विषे रजोहरण आदिक जती का चिन्ह लेकर आजीव का रूप पेट भराई करेंगे और असंजती पणे से फिरेंगे और कहेंगे हम जती हैं ऐसा कहते हुवे प्रवृत्तेंगे और अनेक विधिकरके पीडावेंगे ऐसे द्रव्यलिंगीपने कालतक रजो

हरण आदिक जतीका भेष लेकर फिरेंगे अब इस सूत्रके पाठसे अनेक तरहकी विटम्बना और व्यवस्था बताई परंतु ऐसा सूत्र में किसी जगह न आया कि पासता आदि को मुख बंधन करके फिरना तो न कया भेष तो शुद्ध मुनि का और पासते का एकसा कह्या हां अलबत्ता क्रिया में वा श्रद्धा में फरक किया है दूसरा श्री दसवय कालिक जी के तीसरे अध्येन में ५२ बावन अनाचार कहे परंतु खुले मुख को अनाचार न कह्या तीसरा और भी सुनो कि श्री उतराध्येन जी के पाप श्रवण अध्येन में पाप श्रवण का वर्णन किया कि अकेला साधू विचरे तो पाप श्रवण सीक्षा तरीडते तो पाप श्रवण यरीया सुमति न सोधे अथवा संयम आदि न पाले इस रीति से अनेक बातें न पालने से पाप श्रवण कह्या इस जगह ग्रंथ बढ जाने के भय से हम ने सूत्र का पाठ और अर्थ न लिखाया किंचित मतलब दिखाया बुद्धिवान विचार कर लेंगे अब यहां आत्मअर्थीयो को विचारना चाहिये कि ऊपर लिखी बातों में तो पाप श्रवण कह्या परंतु मुख न बांधने से भी पाप श्रवण है ऐसा सूत्र में नहीं बतायाहै भव्यप्राणियों तुम ने मिथ्यात्व को क्यों फैलाया तब फिर मुख बांधने वाले कहने लगे कि भवतीजी में शक्राई के मध्ये लिखा है कि उघाड़े मुख बोले तो सबद्ध भाषा मुख ढांककर बोले तो निर्वद्ध भाषा इसी लिये क्यों झगड़ा मचाते हो नाहक हम को बहकाते हो. उत्तर भोदेवानु प्रिय! भगवती शतक १६ उदेश २ में तुम्हारे कहने मुजब पाठ है परंतु ग्रंथ बढ जाने के भय से मूल और अर्थ नहीं लिखाते हैं किंचित् वहां का भावार्थ दर्शाते हैं तुम्हारे हृदय में कुगुरु का अर्थ बैठा उसे भगाते हैं क्योंकि देखो श्री गौतम स्वामी ने प्रश्न किया कि हे भगवान् शक्रइंद्र सबद्ध भाषा बोले कि निर्वद्ध भाषा बोले तब श्रीमहाबीर स्वामी ने उत्तर दिया कि हे गोतम शक इंद्र हाथ से मुख ढांके वा वस्त्र से मुख ढांक कर बोले तो निर्वद्ध भाषा और उघाड़े मुख बोलेतो सबद्ध भाषा इस रीति से कहकर फिर टीकाकार ऐसा कहते

हैं कि जीव की रक्षा करने के अर्थ मुख ढांककर बोले तो निर्वद्य भाषा अन्यथा अर्थात् मुख ढांक के भी जीव हिंसा का वचन बोलेतो सावद्यभाषा नतु मुख ढांकने से निर्वद्य भाषा होगी इस लिये भोले भाइयों इस जगह शक्र इंद्र के उपयोग को लिया और यह कथन केवल शक्र इंद्र के आश्रय है नतु सब जीव आश्रय, कदाचित् सर्व जीवके आश्रय मानोगे तो शक्र इंद्र के भाव सिद्ध आदिक छः बोल अच्छे कहेतो वे बोल सर्व जीवाश्रय मानने पड़ेंगे सो तुम मानो गे नहीं इस लिये यह कथन केवल शक्रइंद्र आश्रय नतु सर्व जीवाश्रय इस लिये इस कदाग्रह को छोड़ो बात हमारी मानो तिस से हो तुम्हारा कल्यान, अब दूसरा सुनो प्रमाण कि उघाड़ मुख बोलने को तो हमभी नहीं कहते हैं क्योंकि देखो साधु को तो हमेशा जब शब्द उच्चारण करै तब मुख को ढक कर भाषा वर्गना निकाले और श्रावग लोग मंदिरजी में धर्म्म शाला में अथवा समायक प्रतिक्रमण पोसा दशाव गासी साधु के सनमुख जो वचन उच्चारण करे सो मुख ढककर उपयोग सहित बोले उघाड़े मुख बोलने का उपदेश नहीं है कदाचित् जो तुम अपने हठ से मुख आच्छादन करके बोलने को न मानो और मुख बांधने से ही बोलने वाले की निर्वद्य भाषाहै ऐसा मानोगे तो हम तुम को प्रत्यक्ष का प्रमाण देते हैं और उस की साक्षी विद्वज्जन दें उस का तो कहना ही क्या परंतु ग्रामीण लोग भी तुम्हार मुख बांधने को अच्छा न कहेंगे सोई दिखाते हैं कि एक मनुष्य तुम्हारे जैसा आठ पुरत के बदले १६ पुरत के कपड़े से मुख बांधे और किसी तुम्हारे श्रावक से कहे कि तू दुष्ट है और थारा बाप दुष्ट है और तेरी मा व्यभिचारिणी है तेरी बहिन बेटी आदि दुष्टा हैं और तू बिन परिश्रम का द्रव्य ग्रहण करने की इच्छा रखता है इत्यादि अनेक रिति से कहे अथवा वह मुख बांधा हुवा शख्स कहै कि इस सर्प को मार डालो व कुत्ते को मारडालो व बकरे को मारडालो इत्यादिक मारने

के शब्द आप खुशी तो हो बोले तो फिर अब हम तुम्ही को मध्यस्थ करके पूछते हैं कि ऊपर लिखी बातें तुमारे सेवक सुनके उस मुख बांधने वाले से लड़ाई करेंगे या नहीं तो तुमको कहनाही पड़ेगा कि उस ने बुरा बचन बोला इससे वो अवश्य लड़ेगा दूसरा मुख बांधने वाला जो ऊपर लिखे शब्द हिंसाकारी बोलेगा तो तुम उसका बचन हिंसा कहोगे या नहीं तो तुम को कहना ही पड़ेगा कि उसको बचन की हिंसा लगी इस रीति से बुद्धि का विचार करो खेंचातान को परिहरो दूसरा दृष्टांत हमारा और भी श्रवण करो कोई शख्स तुमारे सेवक को मिला और खुलेही मुख से कहने लगा कि जगापान साहब आप बहुत दिनों में मिले हो आपकी लायकी की हम शोभा नहीं करसक्ते आप के पिताजी की बड़ी लायकी है मेरे को चाहते हैं परन्तु बहुत दिन से मिले नहीं हैं सो अच्छे हैं एक दिना आप तो नहीं मिले में आप के घर गया था और छाछ की मेरे को दरकार थी सो छाछ भी अच्छी भरदी और दूध दही की मनवार भी खूब करी और मासाहब कहने लगे कि बेटा लेजायाकर चावे सो थारा घर है दिन चार की बात है कि मैं फलाने गाम गया था उस गांम मेंशायद आपकी बहन परणाई है सो बाई साब मेरे को मिली थी सो मेरी इतनी खातिरकी कि मेरेको बिना जीमे नही आनेदिया इत्यादि अनेक अच्छीर बातें कहकर आगे को चला और कोई सांपको मारता था उसको देखकर कहने लगाकि अरे भाइ क्यों मारतेहो इसने तुमरा क्या बिगाडा इस दृष्टांत से हम तुम ही को मध्यस्त करके पुछतेहैं की ऊपर लिखा बात तुमारे सेवक सुनकर खातर करेगा वा लडेगा तो तुमकु कहना ही पडेगा का खातर करेगा लडाई का तो कामही क्याहै दूसरा जो सरप को उसने बचाया तो तुमको कहनाही पडेगा की दयारूपी शब्दहै इसलिये इन दोनु दृष्टांतो को विचारो कदाचित् तुम अपने आग्रह से इन दोनो दृष्टान्तो को मनमें सत जानकर उपरसे न बोलोतो

इन दोनों दृष्टांतोंमें अच्छा और बुरा अर्थात् मुख बांधने वाले वा मुख खुलेवाले को भला और बुरा विद्वजन कहेंतो आश्चर्य क्या परंतु नाई, धोबी, कुम्हार, भील आदि पामर पुरुष भी तुच्छ बुद्धि वाले भला बुरा कह सकते हैं हा इति खेदे जैन धर्म में कैसी व्यवस्था होगई सूत्रों की बातें सब खोगईं मनोकल्पित बातों में दुनिया मोहगई इसलिये हे भोले भाईयो सर्वज्ञवीतरागका कहना है कि बोलने में उपयोग राखो जैन धर्मका मजा चाखो मिथ्या मोह बंधने का उपदेश क्यों भाषो दूसरा औरभी सुनो कि श्रीदसवै कालक अध्येन ७ में भाषा बोलनेकी शुद्धि कहीसो ५७ वीं गाथा और अर्थ दिखातेहैं उसके अर्थ में किंचित पन्नवणा सूत्रका भी भावार्थ दर्साते हैं तुम्हारे संदेहको भगातेहैं आगे मरजी तुम्हारी ॥

पाठः— परीसभासी सुसमाहिइंदिऐ चउकसायावगए अणीसीऐ सन्निधूणधुणेमलंपुरेकडं आराहए लोगमिणंताहा परंतवेमी ॥

अर्थः— आलोची अर्थात् विचार कर भाषा बोलने वाला जती समाधिवन्त जितेन्द्री च्यारकषाय करके रहित द्रव्यसूं भावसूं ने सराथ अर्थात प्रतिबंध करके रहित ऐसे जती अर्थात मुनि अने गाम गाम में अपना पाप कर्म रूपी मेल पूर्व जन्म किया हुवा इस लोक परलोक को अराधे ऐसा अर्थ शिष्य को श्री संजम भवस्वामी ने कहा इस भाषा अध्येन में सर्व भाषा बोलनेका रूपकहा परंतु इस अध्येनमें ऐसा न कहा जो साधु. मुख बांधके बोले सातो अराधक नहीं तो विराधक इस जगह तो सर्व अध्येन में च्यारकषायक करके रहित भाषा बोलना कहा परमपरासे भी किसी गच्छमें साधु मुख बांधकर के फिरे विचरे ऐसा देखना तो क्या परंतु सुनाभी नहीं बलके लोंकाने जतियोंके देशके ऊपर जिन प्रतिमा वा जिन मंदिरका पूजना वा बनाना निषेध किया लेकिन मुख बांधना न देखा वा सुनाभी नहीं क्योंकि नागोरी गुजराती लोगोंके

मत के जती फिरते हैं सिवाय ढूंढीयों के मुख बांधना किसीने न चलाया श्रीवीतराग सर्वज्ञ का वचन भी उठाया क्योंकि देखो श्रीपन्नवणां सूत्र के भाषा पद में कहा है कि उपयोग अर्थात् विचार करके चारों भाषा बोलने वाला अराधक है और बिना उपयोग बोले तो विराधक है इस पाठके देखने से तो मुख बांध ले और बिना उपयोग से बोले तो कदापि अराधक न होगा किंतु विराधकही होगा हमने तो इस जगह किंचित भावार्थ दिखाया है उस सूत्र के भाषा पदमें भिन्न २ दरसाया है उस जगह मुख बांधने का जिकर किंचित भी न आया है तुमने मुख बांधने का कुपंथ कहां से चलाया है साधु का नाम धरा पशू अजान स्त्री बालकों को भय उपजाया है साधु का भेष वीतराग ने सर्व जीवों को निर्भय बतलाया है हम तुमको उत्तराध्येन २९ उनतीसवां प्रश्न दूसरे में बतलाते हैं उसकूं देख कर इस कुलिंग कूं उतारो अपनी सद्गति को सम्हारो गुरु का उपदेश सुन मुखपत्ती हाथमेंही धारो जिससे जिन आज्ञा ले होवै तुम्हारो निस्तारो ॥

पाठः—पडिरुवयाऐणभंतेजीवेकिंजणयइ पडिरुवयाए णंलाघवीयं जणयइलहूभूएणंजीवे अप्पमत्ते पागडलिंगेपसथ्थ लिंग विसुद्धसमत्ते सत्तसमीएसम्मेसव्वपाणभूयजीवसत्तेसुविस सणीज्जरुव अप्पपाडिलेहेजीइंदिए विउलतवसमीइ समंन्नागए आविभवइ

अर्थः—स्थिवरकल्पी प्रमुख साधु माया करके रहित जतिपने का भेष लेकर जो साधू माया करके रहित होय सो हे पूज्य वो जीव क्या उपार्जन करै हे गौतम माया करके रहित जो साधू होय वो द्रव्यसूं अल्प उपगरण अर्थात् उपाधि और भावसूं अप्रतिवन्धा पना उपार्जन करे क्योंकि द्रव्य सूं उपगरण का भार करके रहित अर्थात् हलका होय और भावसूं प्रमाद करके रहित होय इस रीति से स्थिवरकल्पी प्रमुख प्रगट जती का भेष होय वो जीव दयाके

हेतु रजोहरणादिक करके प्रशस्थ अच्छा जती अर्थात् वो निर्मल समगत का धनी सत बल वीर्य से पंचसुमति संपूर्ण है जिसके ऐसा हितकारी सर्व प्राण भूत जीव सतके विषे पीड़ा न करे तिस वास्ते सर्वको विश्वास उपजे ऐसा यती रूप भेष है जिसका थोड़ी है प्रति लेखना क्योंकि थोड़ा उपगरण होनेसे पडिलेहणा भी थोड़ी होती है और जितेन्द्री तप करके संयुक्त इंद्रियां आदिक संयुक्त होय इस पाठ से साधू का भेष सर्व प्राणी भूत जीवों के हितकारी विश्वास कराने वाला जिस में किसी को भय न उपजे ऐसा श्री वीतराग सर्वज्ञ देवने कह्या सोतो खरा परंतु मुख बंधे भेषको देख के प्रत्यक्ष जीवों को अहितकारी अर्थात् भयकारी दीखे है क्योंकि बालक डरते हैं गाय भैंस आदि ढोर भी देखकर भागते हैं ग्राम में घूमते कुत्ताभी भुसते हैं और अनजान घरमें घुसने से स्त्री कहती है कि अरे ये कौन है मुख बंधा इसलिये मालूम होताहै कि मुख बंधा भेष साधुका नहीं क्योंकि मुनि का भेषतो सर्व को सुहाता अर्थात् प्रीतिकारी होताहै मुख बंधा भेष तो प्रत्यक्ष भांड रूपहै ऐसा मुनीका भेष सर्वज्ञ देव कदापि न कहेगा इसलिये मतपक्ष को छोड कर ज्ञान दृष्टि से देखो क्यों कि साधु जगत का पूजनीक है और ऐसा श्री वर्धमान स्वामी श्री मुखसे मुनिको पूज्य कहाहै और पूज्य उसीको कहना चाहिये कि जिनको जगत पूजे मुख बांधने वाले सोमल सन्यासी के लिंगको सम्यक्त दृष्टी देवता ने वारंवार निंद्या करी है सो पाठ हम पीछे लिख आये इसलिये हे भोले भाइयो मुख बांधने के कदाग्रह से मुख मोड़ो करनी परूपो धर्ममे प्रीति जोड़ो कुगुरुका संग छोड़ो क्योंकि श्री वीतराग सर्वज्ञदेव एक एक बातका बार बार करके दरशाई है परंतु साधुको मुख बांधने की किंचित् भी सूत्रमें बात नहीं और है जिस जगह बांधने का काम पड़ता है उस जगह खुलासा मुख बांधना सूत्रों में आयाहै सोभी तुम्हारी करुणा से भगवतीजीशतक ८ मा उद्देशा ३३ में नाईका मुख बांधना कह्या

सोभी दिखाते हैं—

पाठः—जमालिस्स खतियकुमारस्स पिउणाकोडंविय पुरिसेहिंसद्दावे माणाहट्ठतुट्ठण्हए कयंवलिकम्माए जावशरीरे जेणेवजमालिस्स खतियकुमारस्सापिया तेणेवउवागछइ २ त्ता करयल जमालिस्सखतिय कुमारस्सपियाएजइणंवधावेति २ त्ता एवंवयासीसंदिसणंदेवाणुपियाए जमएकरणिज्जे तएणंसे जमालिस्सखतिय कुमारस्सपियाए तंकासावियं एवंवयासी तुमेदेवाणुप्पियाजमालिस्स खातिय कुमारस्स परेणजत्तेणंचउ रंगुलियं वज्जेनिखमणपयोगं अग्गकेसेकप्पेहिंतएणंसे कासवे जमालिस्स खतिय कुमारस्स पिउणाएवंवुत्त समणाहट्ठतुट्ठजाव करयल जावएवंसमीतह तीणएविणयवयणं पाडिसुणेत्ता सुरभि णागंधोदयणं हथ्थपादे पखालेइ सुर२सुद्धाइ अट्ठपाडिलाए पोती ये मुह बंधइ २ त्ताजमालिस्स खातिय कुमारस्स परेणं जत्तणं चतुरं गुलवज्जे निखमण योगे अग्गकेसे कप्पेति सूत्र ज्ञाता अध्येन १ मेंदखो ॥ ततेणंसेकासवएहिं कोटुंबीयं पुरीसेहिं सद्दाविएस माणेहट्ठतुट्ठजावाहिय तराहए कयवलीकम्मेक यक्र ओय मंगल पछिते शुद्ध पावे साइ पवपर रहीए अप्प महग्घा भरणालंकीयसरीर जेण वसेणीएराया तेणेवउवा गछइ २ त्ता सेणी यंकरयल मंजली कटु एवंया वयासी संदी सणं देवाणु पिया जमएकरणी ज्जंतएणं सेसेणीयराया कासवयं एवं वयासी गछहीणं तुभ्भे देवाणु प्पिया सुर भीणं गंधो दयणंणोंहथ्थ पाय पखाले हिं सयाए चउ पुलाए पत्तिए मुह बंधी ता मेहस्स कुमारस्स चउरं गुल वज्जे निखम ण पाउगे अग्ग केसे कप्पेहिंतएणं सेकासवेइ सेणि एणं २ णाएवंवुत्तसमाणे हट्ठतुट्ठ जावहियाए जावपाडिसुणेति २ सुरभिणागंधोदएणं हथ्थपाएपखालेति २ ता सुद्धवथ्थेणं मुह बंधई २ त्ता परेणं जंतणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निखम णपोउगो अगाकेसे कप्पइतएणं तस्स मेहस्स कुमारस्स

माया महरिहेणं हंसलक्षणेणं पडगमाडएणं अगाकेसे पडिच्छति २ सुरभीणां गंधो दएणं पखालेइ २ सरसेणं गोसीस चंदणेणंचच्चा उदल याति २ सेयाएवधाति २ रयण समुग्गायं सिपखिवेति ।

अर्थः—ये दो पाठ में पहिला पाठतो भगवतीजी का और दूसरा पाठ ज्ञाताजी सूत्रका इन दोनों पाठों में मतलब एकसा है और जिसमें फरक है उस बात को हम खोल देंगे इसलिये ये बुद्धिमान् एक पाठ के अर्थ से ही समझ जावेंगे इसलिये प्रथम भगवतीजी का पाठ दिखाया है सो अर्थ जमालीखेत्री कुमार के पिता ने अपने नौकरों के हाथ नापित को बुलाया और नौकर लोगों ने नापित को कहा कि तुमको बुलाते हैं जब नापित बहुत हर्षित हुवा और स्नान करके अपने घर देव की पूजा करी फिर अच्छे वस्त्र आभरण पहिन कर उन नौकरों के साथ जिस जगह जमाली खेत्री कुमार का पिता था उस जगह आय कर दोनों हाथ जोड़ कर जमालीखेत्रीकुमार के पिता को बधापा देकर कहता हुवा कि हे स्वामिन् जो आप मेरे को आज्ञा करो सो मैं करूं तब जमाली क्षेत्री कुमार का पिता नाई से कहने लगा कि भोदेवानु प्रिय ! जमाली क्षेत्री कुमार के परमयत्न कर के चार उंगलचोटी के केश दिक्षा लेने के वास्ते बाकी के सर्व केश दूर करो जब जमाली क्षत्री कुमार के पितासे ऐसा बचन सुना तब नाई खुशी होकर दोनों हाथ जोड़ कर कहने लगा कि स्वामी तेहत अर्थात् आप का फरमाना ठीक है विनय संयुक्त बचन सुन के सुगंधित पानी करके हाथ पग धोय करके केशर चंदन कपूर आदि सुगंध वा शीत वस्त्र के आठ ८ पुरत करके मुखको बांधा फिर जमाली क्षत्री कुमार के अच्छी तरह से चार उंगल केश बर्ज के आगे के प्रधान सरीखे केश नाईने जमाली कुमार के केश बनाये तब नाई ने मुख बांधा नाई के मुख बांधने का वस्त्र कहा और मृगावती रानी के कहने से श्री गोतम स्वामी ने मुख बांधा उस जगह मुंहपत्ती कही मुखतो

दोनों के सरीखा बांधा परन्तु नाई को वस्त्र कह्या और मृगावती रानी के कहने से श्री गोतम स्वामी ने मुख बांधा उस जगह मुंहपत्ती कही मुख तो दोनों के सरीखा बांधा परन्तु नाई को वस्त्र कह्या और गोतम स्वामी को मुखपत्ती कही इसलिये विचार करना जरूर है बिना बिचारे जैन धर्म दूर है शास्त्र प्रमाण बिना मुख बांध कर जैन साधु बनों क्या तुम्हारा मगदूर है जिन आज्ञा विरुद्ध मुख बांधतेहो बुरा दीखे रूपनहीं चहरेपरन रहे नूरहै अब दूसरे श्री ज्ञाताजी के पाठ में श्रेणिक राजा को उपदेश लेकर मेघ कुमार की दिक्षा का वर्णन जानो आगे पीछे की बात उसी तरह पहिचानो परन्तु उस पाठ में तो नाईने मुख बांधने का वस्त्र अर्थात् पोतिया के आठ पुर्त से मुख बांधना कह्या और इस ज्ञाता सूत्र के पाठ में वस्त्र अर्थात् पोतिया के चार पुड़ अर्थात् चार तेह करके मुख बांधा बाकी का सर्व मतलब पीछे लिखाते सो यह जान लेना अब इस जगह नाई के मुख बांधने को सर्वज्ञ देव पोतिया अर्थात् वस्त्र कह्या परन्तु मुंहपत्ती न कह्या इसका कारण क्या इसलिये हे भोले भाइयो गुरु कुल वास बिना इस सूत्र का रहस्य मिलना मुशकिल है क्योंकि देखो नाई उस वस्त्र को हरएक काम में ले आता है इसलिये उसको मुंहपत्ती न कह्या और पोतिया अर्थात् वस्त्र कह्या और श्री गोतम स्वामी की मुखपत्ती कह्या सो कारन क्या सोई दिखाते हैं कि गोतम स्वामी के पास मुख वस्त्र है तिस वस्त्र की ऐसी थापना प्रमाण सहित करी हुई है कि इस वस्त्र से मुख ढकने के सिवाय दूसरा कोई काम इस वस्त्र से न करना इस वास्ते श्री गोतम स्वामी के वस्त्र को मुखवस्त्र का कह्या और इसी रीति से इस ज्ञाता सूत्र के आठवें नोवें अध्येन में जितशत्रु राजा वा श्री मल्लिनाथ स्वामी के अधिकार में मुख ढकने के वास्ते पछेवड़ी दुपट्टा मुख ढकने के वास्ते कह्या ग्रंथ बढ़ जाने के भय से न लिखाया इस लिये हे भोले भाइयो! बुद्धि का बिचार कर मत पक्ष को खूंटी पर धर हमने तुम को इतना

पाठ सूत्र का दिखाया साधु को मुख बांधना कहीं पर न आया क्यों तुम ने कुलिंग बनाया आप डूबे और श्रावक कूं मुख बांध कर डुबाया जिन आगम के बीच गृहस्थी को मुख बांधना मेरे देखने में न आया न मालूम जिन शास्त्र बिदून मुख बांधने का पंथ कहां से चलाया श्रावक का वर्णन श्री उपासकदिशा सूत्र में पाया उस सूत्र बिना गृहस्थियां का मुख तूने क्योंकर बंधवाया इस लिये हे भोले भाइयो पक्षपात को छोड़ कर बुद्धि का बिचार करो सूत्रों पर आस्ता धरो जिससे तुम्हारा कल्याण हो क्योंकि देखो उपासकदिशा सूत्र अध्येन ३ तीसरे में है सो पाठ दिखाते हैं ॥

पाठः—जहा आणंदो जावसमणस्स भगवउ महाबीरस्स अंतिय धम्मंपन्नति उवसंपज्जिताणं विहरइतएणंतस्स काम देवस्स पूव्वरत्ता वरतकालसमयंसी एगेदेवमहामिछाविट्ठी अंतियपाउभुए ।

अर्थः—जिस रीतिसे अनंद ने श्रवण भगवंत श्री महाबीर स्वामी के पास में धर्म की उपसमीप अर्थात् बारह व्रत अंगीकार किये थे तिस रीति सेही कामदेव ने श्रावक के १२ व्रत अंगीकार किये सो कामदेव दर्शन प्रतिमा का अवग्रह लेकर विचरता था सो एक दिन कामदेव के पास अर्ध रात्रि के समय एक मिथ्या दृष्टि देवता पिशाच का रूप करके अनेक तरह के वाक्य बोला परन्तु सोमल सन्यासी के काष्ट की मुहपत्ती बंधी हुई कही तिस रीति से कामदेव श्रावक के वस्त्र की मुखपत्ती बांधी हुई न कही इस पाठ से मालूम होता है कि श्रावक ने भी मुखपत्ती न बांधी क्योंकि देखो कामदेव श्रावक पड़िमा विषे बैठा था तो इस जगह ऐसा पाठ होता कि (वथ्थमुदाय मुहबंधेइ) ऐसा पाठ सूत्र में नहीं इस लिये बुद्धिमानों की बुद्धि में साफ मालूम होता है कि पडिमा के विषे श्रावक मुख नहीं बांधा तो फिर बखाण आदिक में मुख बांध कर बैठना क्योंकर बनेगा।

इसलिये जिन आज्ञा को साधो मुख बांधने से भागो मुंहपत्ती को जल्दी तोड़ो तागो जिससे मिले जैन धर्म सागो दूसरा और भी चूलिनीपिता श्रावक का पाठ दिखाते हैं सूत्र की शाख बताते हैं पोषटशाला में बैठे हुवे श्रावक का पाठ सुनाते हैं ॥

पाठः— **जावपोसहसालाए पोसहिएबंभयारीसमणस्स भगवउमहावीरस्स अंतिएधम्मपन्नति उवसंपज्जित्ताणंविह रइ तएणंसेचुलणीपीयस्स पूव्वरत्तावरतकालसमयंसि एगेदेवे पाउभ्भूए । उपासक दशासूत्रमध्ये अध्येन ३ ॥**

अर्थः—जिस वक्त पौषधशालाके विषे पोशा करके साहित ब्रह्म चर्य्य वृतका धारण करनेवाला शुद्ध सम्यक्त साहित श्रवण भगवंतश्री माहावीर स्वामी की उपसंपदा लेकर विचरता हुवा ऐसा कौन चूलिनी पिता श्रावक उसके पास मध्य रात्रि के समय एक देवता प्रगट हुवा इस जगह भी श्रावक को पोशा में भी मुख बांधने का न आया हमने तुमको चूलिनी पिता श्रावक का सूत्र अनुसार पाठ बताया सूरतवाले लवजी धर्मदास छीपा आदिने मुख बांधना चलाया जातिकुल के श्रावकों में मिथ्यात्व फैलाया बाइ और भाया का मुख बांधकर चहरे का नूर गमाया इसीलिये हमने लिंग निर्णय बनाया सुरादेव श्रावक का तीसरा पाठ याद आया सोभी दिखाते हैं ॥

पाठः—**जहाआणंदोतहेवपडिवज्जए जहावसमणस्सभ गवउमहावीरस्स धम्मपन्नातिविहरइ तएणंतस्ससुरादेवस्स समणोवासगस्स पूव्वरत्तावरतकालसमयंसि एगदेवअंतियं पाउभ्भाविथ्था उपासकदसासूत्र अध्येन ४**

अर्थः—जिस रीतिसे आनंद श्रावक ने बारह वृत अंगिकार किये थे उस रीतिसे श्रवण भगवंत श्रीमाहावीर स्वामी के पास सुरादेव ने अंगिकार किये फिर उस सुरादेवने दर्शन प्रतिमा का अविग्रह लेकर बिचरने लगा सो उस सुरादेव श्रावक के पास

आधीरात के समय एक देवता आया इस पाठ में भी मुख बांधने का जिक्र न आया इसी सूत्र के अध्येन ५ चूल शतक श्रावक के पास भी देवता आया ग्रंथ बढजाने के भय से उस पाठ को न लिखाया तुमने फिर मुख बांधना कहांसे चलाया भांड का सा भेष जैनी नाम क्यों धराया मुख बांधकर बैठने में तुमको लज्जा न आया क्यों तुमने पाखंड चलाया और भी इसी अध्यन में से कुंड कोलिया श्रावक का पाठ दिखाते हैं ॥

तएणंकुंडकोलिए अणयाइ पुव्वरत्तावरतकास मयंसि जेणअसोगवाडिया जेणेवपुढवी सीलापट्टइ तेणेवउवागछइरता नामामुद्दगंचउत्तरिगंच पुढवीसीलापट्टए ठवेइरत्ता समणस्स भगवउमहावी रस्स अंतियंधम्मंपन्नति उवसंपज्जित्ता तएणंतस्सकुंडकोलियस्स एगेदेवेअंतियंपाउभ्भाविथ्था तएणं सेदेवेनामुद्दगंच उत्तरिज्जवपुढवीसीलापट्टयउगणइ ॥

अर्थः-कुंडकोलिघू श्रावग एक दिन के समय मध्य रात्रि के विषे जहां तसोगवाटी पृथ्वी में शिला रूप है इसजगह आय कर नाम अंकित मुद्रा और वस्त्र उतार कर पृथ्वी ऊपर रक्खे श्रवण भगवंत श्री महावीर स्वामी के पास धर्म प्रजापति अंगिकार करके बिचरता हुवा तिस कुंड को लिये श्रावग के पास आया और उस देवताने नाम अंकित मुद्रा और उतारे हुवे वस्त्र पृथ्वी शिला पट्टसूं लेकर घुघरा सहित वस्त्र पहिरेहुवे आकाश में खड़ा होकर कुंडकोलिया से ऐसा कहने लगा कि अहो कुंडकोलिया गोशाले के धर्म में बिना परिश्रम किये हुवे मोक्ष मिलती है इस रीति से कहा इसजगह श्रावग धर्म करनी में बैठाथा जो मुख बांध के बैठा होता तो सोमल सन्यासी के काष्ठ की मुंहपत्ती का सूत्र में पाठ था ऐसा इसजगह वस्त्र की मुखपत्ती का पाठ होता सो पाठ न आया तुमने मुख बांधना क्योंकर चलाया सूत्र के देखने से गोशालेनेभी मुख बांधने का पंथ न चलाया इस सूत्र के सातवें

अध्येन में गोशाले के श्रावग का अधिकार आया तुम्हारे मिथ्यात्व को छुड़ाने के वास्ते उस पाठ को लिखाया।

तएणंसेसद्दालस्स आजीवउवासाए अन्नयाकंयाइं पुव्वा वरत्तकालसमयंसि जेणेवअसोगवडिया तेणेवउवागछइ २ त्ता गोसालस्समंखलिपुत्तस्स णंतियधम्मपन्नति उवसंपज्जित्ता० तएणंतस्ससद्दालस्सआजीविएकेदेवे अंतियंपाउभ्भवित्ता तए. णंसेदेवेअंतिलखपडिवणे संखंखिणयाइं जावपरिहिए सद्दाल पुत्तं आजिविउवासएय एवंवयासिएहिणंदेवाणुप्पिया कल्लं इहंमहामहाणे उपन्ननाणदंसणधरे तीयपडुणमणागयजाणए अरहाजिणकेवली सव्वन्नुसव्विदरसीणं तिलोकहितमहिएपु इएसदेवमणुयासुरस्सलोगस्स अच्चिणिज्जंवंदणिज्जेपुयणिज्जे सक्कारणिज्जे समाणिज्जे कल्लाणंमंगलंदेवयंचेइयं जावप ज्जुवासणिज्जे तच्चकम्मसंपयासंपत्ते तन्नतुमंवंदजाहि जाव पज्जुवासेज्जाहिं पाडिहारिएणं पीढपलगसिज्जासंरयणं उव निमंतेज्जाहिंदोच्चंपि एवंवयासी जामेवदिसंपाउभूया तामे वदिसंपडिगया तेणंतस्ससद्दालपुत्तस्स आजिवउवासगस्स तेणं देवेणं एवंवुत्तस्स इमेयारुवे अभ्भथ्थिउ ४ समुपन्ने एवंखलु ममधमारिए धम्मोवएसएगोसालोमंखलीपुत्तो सेणंमहामाहणे उपन्ननाणदंसणधरे जावतच्चकम्मंसंपयासंपउत्ते सेणंकल्लं इहंहव्वमागछासि तएणंतंअहंवंदिस्सामी जावपज्जुवासिस्सामी पाडिहारएणं जावउवनिमंतिस्सामी तएणंकल्लजावजलंते समणेभगवं० जावसमोसरीए ॥

अर्थः—तिसके बाद शार्दूल पुत्र आजीविका उपासक एक दिन के समय अर्ध रात्रि के विषे जिस जगह अशोक वन था उस जगह आया वह शार्दुल पुत्र गोशाला माखली पुत्र के पासमें धर्म अंगिकार किया था सो उस शार्दूल पुत्र आजीवक उपासक के पास एक देवता आया वो देवता आकाश में अधर रहा हुआ घुघरे पैरया हुआ सहित शार्दुल पुत्र आजीवक उपासक से कहने लगा

कि हे देवानुप्रिय कल्ल इस जगह एक मोटा ब्रह्मचर्य का धारण करने वाला उत्पन्न संपूर्ण ज्ञान दर्शन करके अतीत अनागत वर्त्तमान का जानने वाला सर्व का पूज्यनिक रागद्वेष जीतने वाला केवल ज्ञानी सर्वज्ञ सर्व को देखनेवाला त्रिभुवन का पूजनीक सर्व देवता मनुष्य असुर भुवनपति का अर्चनीक वंद्यनीक पूज्य नीक सत्कारणिक कल्याणकारी मंगलकारी चैत की तरह परो उपासनीक अर्थात् सेवा कर ने योग्य नाम कर्म की संपदा अतिशय कर के संयुक्त ऐसा पुरुष कल्ल इस जगह आवेगा उसको तू बांधना अर्थात् सेवा करना प्रतीहारादिक फासु फलक सिजा संथारो पाट पाटलाडा वादी निमंत्रण करना ऐसा दो तीन बार कह कर जिस दिशा से आया था उसी दिशा को पीछा गया तिस के बाद शार्दूल पुत्र आजीवक उपासक ने देवता का ऐसा बचन सुना तब मनमें अव्वसाय उत्पन्न हुआ कि निश्चय करके मेरा धर्माचरण धर्मोपदेश का देनेवाला गोशाला मारवली पुत्र वह मोटा ब्रह्मचारी का धनी उतपन्न ज्ञान दर्शन यावत् नाम कर्म संपदा करके सहित कल्ल यहां आवेगा तिसको में बांधूंगा और प्रतीहार फासु सिज्यादि निमंत्रण करूंगा तिसके बाद दूसरे दिन प्रभात समय श्रवणभगवंत श्री माहावीर स्वामी उस जगह समोसरा अर्थात आया तब शार्दुल पुत्र को देवता पहले कहगया था सो भगवंत आयगये सो उसके मनमें ऐसा आया कि यह प्रभु तरण तारण तो नहीं परंतु प्रभु के पास में गया और धर्म का निर्णय करने लगा तब उसको केवली परुप्यत धर्म की प्राप्ती हुई लेकिन मत पक्ष को छोडकर विवेक सहित बुद्धि का विचार किया तो धर्म को पाया कदाचित विवेक सहित बुद्धि का विचार न करता और गोसाले के मत की पक्ष पकडता वा गोशाले से निर्णय करता तो आत्मधर्म की प्राप्ति कदापि न होती क्योंकि पक्षपात से धर्म नहीं मिलता यह तो चोथाकाल में भी मत पक्ष और अपने को सच्चा और दूसरे को झूठा कहते थे तो इस पंचम

काल वर्तमान की व्यवस्था क्या कहैं क्योंकि देखो श्रीआनंद घन माहाराज कहते हैं कि अभिनंदन जिन दर्शन तरसीयो दर्शन दुर्लभ देवमत मत भेदे हो जो जाय पूछिये सोथापत अहीमेव इस रीति से सब कोई अपने को सच्चा और दूसरे को झूठा कहते हैं सो प्रत्यक्ष मालूम होते हैं क्योंकि देखो मुख बांधनेवाले ढूंढिया कहते है कि जो श्रावग मुख नहीं बांधे वो श्रावग नहीं हिंसा धर्म्मी मंदिरपूजन वाला है इस कहने से प्रत्यक्ष मालूम होता है कि उलटा चोर कुतवाल को डंड किसलिये की जिन पूजन अनादि से शास्त्रानुसार आत्मार्थी करते चले आते हैं तिसको बुरा कहकर शास्त्र बिदून मुख बांधना अच्छा बताते हैं कुलिंग थापने में जरा भी नहीं शरमाते हैं अपनी खींचातान मचाते हैं उत्तर तो देते नहीं केवल गाल बजाते हैं परभव से जरा भी डर नहिं लाते हैं आपतो डूबे जातिकुल के जैनियों को डुबाते हैं इस रीति से हे भोले भाईयों गोशाला भी जैनी बनता था परंतु अपने श्रावगों को मुख न बंधाया इस लिये हमने गोशाले के श्रावक का कथन सुनाया उपासक दिशा सूत्र सातवां अध्येन का लेख लिखाया सूत्रके बिना मुख बांधने का कुलिंग किस खाड से चलाया इसलिये हमने लिंगनिर्णय ग्रंथ को बनाया सिद्धान्त बिदून क्यों कुलिंग को बनाया मुख बांधने से अपने चहरे का नूर गुमाया गांव में घुसते हुए कुत्ते को भुंकाया हमने तुम्हारे कल्याण के हेतु इतने सूत्रों का पाठ समझाया इतने पर भी न मानोगे तो दुर्गति को जाओगे भाईयो इतना सुनकर कुमत मंडन ढुंढक मुख बांधने वाला चौंककर बोला कि आप अपनीही कहते हो या किसी दूसरे की भी सुनते हो भला शास्त्रों के प्रमाण से निषेध किया परंतु हाथ में रखना तो हमको बतलाइये क्यों नाहक झगड़ मचाई है तोते की तरह टैंटैं लगाई है क्योंकि मुंह पत्ती कहने से मुख पर बांधते थे हाथ पत्ती नहीं जो हाथ में रखते हो और जो हाथ में रखते हो तो हमको ऐसा पाठ

बताओ (उत्तर) अंग चुलीए सुत्र मध्य देखोः—

तऔसुरी हितदानुण एहि पट्टोवरी कुपरी विठिए हिंर यहरणं ठावीतावामकरामीया एमुहयती लंवभरीतु ॥

अर्थः—तिसके बाद आचार्य की आज्ञा हुई कि कोनीके ऊपर रजोहरण रख दक्षिणदिशा रजोहरण की डोरी या रस्सी राखे हाथ विषे अनामिका उंगली ऊपरला विमुख पत्ती धारण करे यह कहने से मुखपत्ती हाथ में रखनी कही है और मुख बांधने को तो किसी जगह नहीं कही क्योंकि देखो जब दिक्षा देने के समय गुरुने शिष्य के हाथ में मुखवास्त्रिकादि अर्थात् रखीतो फिर मुख बांधने की आज्ञा किसने दी आत्मार्थीयोंने सूत्र की बात चीनी इसालिये हे भाइयों जो भगवत का बचन जमालीने तनकसा उठाया तिसपर उसको निन्दक ठहराया डुबानडुबैया बताया जमालीने अनंत संसार अपना बधाया कुछ लिंग का भेद न चला या करे माने अकेर ऐसा शब्द सुनाया इसका वर्णन श्री भगवतीजी में आया तुमने तो भगवतके बचन को उठाकर मुख बांधने का पंथ चलाया अनंत संसार को बधाया इसके सिवाय मुख बांधने में कुछ सार न पाया इसके ऊपर हमको श्रीमहानशीध सूत्र की चूलिकाका पाठ याद आया सो हम भव्य जीवों को लिखकर दिखाते हैंः—

कणोठीया एवामुहणंतगेणवा विण इरियं पडिकमेमिछू कडंपूरी मठंवा ॥

अर्थ मुखपत्ती कानमें थापन करे तथा मुखपत्ती आदिक सों मुख को ढांके बिना जो इरीयावहि पडिक्केमे तो दंण्ड नहीं आवे इस जगह कान के विषे मुखपत्ती थापन करने से दंण्ड कहा इस हेतु से हाथ में रखना सिद्ध हुया क्योंकि देखो मुखपे बंधी हुई होतीतो मुख ढके विदून इरीयावइ पडिक्कमे तो दंण्ड आवे एसा कहना सूत्रकारका कदापिन बनता इसालिये मुख बांधना अपनी इच्छा का चलानाहै इस

को सुन मुख बांधने वालोंने कहा॥कि श्री गोतमस्वामी ने मृगा राणी के कहने मे मुख बांधतो श्री गोतमस्वामी आपनी इच्छासे सूत्र विना मुखको बांधातो यह दूषण उनमेंभी आया (उत्तर) भोदेवानुप्रिय अपना एब गणधर आदिकमें मत लगावो कुछ बुद्धि का विचार करो कि श्री गोतमस्वामीने रानीके कहने से व्यवहार निमित्त मुख बंधन किया कुछ लिंग थापन न किया अथवा साधुका भेष जानकर मुखको न बांधा अथवा डोरा घाल कर तुम्हारी तरह अष्ट प्रहर मुखपर मुखपत्ती न बांधी क्योंकि देखो साधुका माथा दुखनेसे कपड़े से माथा बाधता है वा फोडा आदिक होयतो उस जगहभी पाटा आदिक बांधा जाताहै परंतु साधुका लिंग जानकर नहि बांधते इसालिये बुद्धिका विचार करो जो वर्तमान कालमें मुख बाधतेहैं सोतो साधुका लिंग जानकर बांधतेहैं और अपने में मुख बांधने से साधु पना ठहरातेहैं हाथमे रखने वालेकूं लिंगी भ्रष्टाचारी हिंसा धर्मी बतलाते हैं कारण से जो कोई बांधताहै वो कारण मिटने के बाद खोल देताहै और उसको थापन नहीं करता इसलिये मुखपत्ती को मुख से खोलो सूत्रके अर्थ को तोलो मिथ्यात्वको खोलो जिससे अनंत संसारमें न डोलो जिन वाणीको सुध करके बोलो क्यों खातेहो जकजोलो जिससे जैन धर्म हाथ लगे अमोलो औरभी देखोकि आवश्यक निरयुक्ति अध्येन ५ में काउसग के समय मुखपती हाथमें रखना कहाहै सो पाठ दिखाते हे॥

चउरं गुलमो हपोता एउज्जुए व्पह थ्थिरय हरणं वोस हचत दहो काउस गांकर ज्जाहिः ॥

टीका चरपायंगं लानी पाद

पोरंतर कार्यं उ० मुखपत्ती कादक्षिण हस्तेन ग्राह्या वाम हस्तेन रजोहरणं कार्यं एतेन विधिना व्युत्सृष्टय यक्तदह कायोत्सर्गं कुर्यात् दोष द्वारमाहे. ये अर्थ तथा अर्थ भाषामेंदोनं पग से खडा हो कर चार अंगुल का बीच अर्थात् जगह रक्खे और मुखपत्ती

Serving JinShasan
022433
gyanmandir@kobatirth.org